वन विभाग हिमाचल प्रदेश

जाइका वानिकी परियोजना
वर्ष 2022-23 की मुख्य गतिविधियां

अंक 3 | 2023

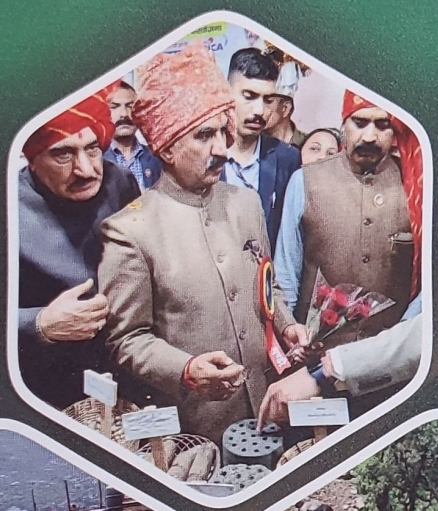

हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन
एवं आजीविका सुधार परियोजना (जाइका वित्तपोषित)

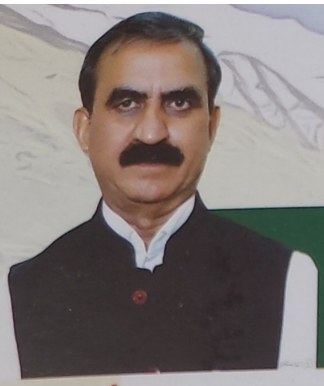

हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन एवं आजीविका सुधार परियोजना (JICA वित्तपोषित)

सम्पूर्ण लक्ष्यः
हिमाचल प्रदेश राज्य में सतत् सामाजिक–आर्थिक विकास के लिए वन क्षेत्रों द्वारा पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं में सुधार किया जाना है।

परियोजना कार्यान्वयन क्षेत्रः
यह परियोजना हिमाचल प्रदेश के 7 जिलों (बिलासपुर, काँगड़ा, किन्नौर, कुल्लू, लाहौल एवं स्पीति, मण्डी और शिमला) के 9 वन वृतों, 22 वन मण्डलों और 72 वन परिक्षेत्रों में कार्यान्वित की जा रही है। यह परियोजना हिमाचल प्रदेश वन विभाग, कार्यान्वयन क्षेत्र में गठित ग्राम वन विकास समितियों (वीएफडीएस) और जैव विविधता प्रबंधन समितियों (बीएमसी) के माध्यम से हिमाचल प्रदेश सोसायटी अधिनियम, 2006 के तहत पंजीकृत एक स्वायत्त "सोसाइटी" द्वारा कार्यान्वित की जा रही है जिसका नाम "हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन एवं आजीविका के लिए सोसायटी" के रूप में नामित किया गया है।

परियोजना की लागत और अवधिः
इस परियोजना की कुल लागत लगभग 800 करोड़ रुपये है और अवधि 10 वर्ष (2018–2019 से 2027–28) है।

परियोजना का ध्येयः
परियोजना क्षेत्र में वन पारितन्त्रों का सुनियोजित कार्य–कलापों द्वारा बेहतर प्रबन्धन प्रदान करना जिससे की वनों में वृद्धि हो, जैव–विविधता का सरंक्षण हो, समुदाय की आजीविका में सुधार एवं संस्थागत क्षमता का सुदृढ़िकरण हो।

परियोजना के घटकः

घटक 1: सतत् वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन
घटक 2: जैव विविधता संरक्षण
घटक 3: आजीविका सुधार सहयोग
घटक 4: संस्थागत क्षमता सुदृढ़िकरण

परियोजना की प्रमुख गतिविधियां एक नजर में:

- 460 ग्राम वन विकास समितियों और जैव विविधता प्रबंधन समितियों (उप–समितियों) की पहचान एवं उनका गठन किया गया है।
- 403 सुक्ष्म विकास योजनाएं तैयार की गई हैं।
- 750 स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) / साझा रुचि समूह (सीआईजी) गठित किए गए हैं जिनमें से 500 से अधिक स्वयं सहायता समूह पूर्ण रूप से महिला संचालित समूह हैं।
- JICA वानिकी परियोजना द्वारा 503 स्वयं सहायता समूहों को अनुदान के रूप में एक–एक लाख रूपये की राशि अपनी आजीविका वर्धन कार्यों को गति देने के लिए दी गई है।
- स्वयं सहायता समूहों द्वारा अपने व्यवसाय के सुनियोजित ढ़ग से चलाने हेतु परियोजना के सौजन्य से 556 व्यावसायिक योजनाओं का निर्माण किया गया है।
- ग्राम वन विकास समितियों / जैव विविधता प्रबंधन समितियों के लिए परियोजना जागरूकता कार्यशालाएं / कौशल आधारित प्रशिक्षण समय–समय पर आयोजित किए जाते हैं। 365 स्वयं सहायता समूहों को कौशल आधारित गतिविधियों में प्रशिक्षण प्रदान किया गया है। जिससे समूह के सदस्यों को आमदनी का अतिरिक्त साधन प्राप्त हुआ है।
- ग्राम वन विकास समितियों / बीएमसी के माध्यम से परियोजना द्वारा 4600 हेक्टेयर क्षेत्र (पीएफएम और विभाग) में वृक्षारोपण किया गया है।
- "पौधशाला विकास योजना" के तहत जाइका वानिकी परियोजना द्वारा 72 विभागीय पौधशालाओं को मजबूत किया गया है।
- जड़ी–बूटी प्रकोष्ठ द्वारा पिक्रोराईजा कुरूआ (कुटकी), स्वर्शिया कॉर्डेटा (चिरायता), हरड़, आवंला, रिठा, मोरिंगा व टौर के पत्तों की प्लेट बनाना, चीड़ के पत्तियों का संग्रहण, पेरिस पॉलीफिला (सतुआ) के प्रसार के लिए प्रकंद और एसपेरेगस रेसमोसस (शतावरी) की व्यावसायिक खेती को बढ़ावा दिया जा रहा है।

नागेश कुमार गुलेरिया, भा.व.से.
अतिरिक्त प्रधान मुख्य अरण्यपाल एवं
मुख्य परियोजना निदेशक (JICA-PIHPFEM&L)

Project Office: Potter's Hill, Summer Hill, Shimla-5, e-mail: cpdjica2018hpfd@gmail.com, pdjicakullu@gmail.com
Phones: 0177- 2832217, 2831217 Website : https://jicahpforestryproject.com

वन विभाग हिमाचल प्रदेश

जाइका वानिकी परियोजना

वर्ष 2022-23 की मुख्य गतिविधियां

हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन
एवं आजीविका सुधार परियोजना (जाइका वित्तपोषित)

परियोजना कार्यालय, पॉटर्स हिल, समरहिल, शिमला-171005 (हि.प्र.)
दूरभाष : 0177-2830217 ई-मेल: cpdjica2018hpfd@gmail.com

सुखविंदर सिंह सुक्खू
मुख्यमंत्री, हिमाचल प्रदेश

संदेश

यह प्रसन्नता का विषय है कि हिमाचल प्रदेश जाइका वानिकी परियोजना द्वारा मुख्य गतिविधियों पर आधारित तीसरी वार्षिक पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है।

मेरा मानना है कि यह पत्रिका परियोजना और स्थानीय समाज के बीच एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में कार्य कर रही है। इस परियोजना से वन आश्रित समाज सबसे अधिक लाभान्वित होगा। हिमाचल जैसे छोटे और पहाड़ी प्रदेश में जाइका की पहली वित्तपोषित परियोजना है, जो विशेष रूप से अंतिम वन छोर और वन आश्रित के पर्यावरणीय और सामाजिक-आर्थिक विकास में योगदान करते हुए वन पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं के संवर्धन और प्रबंधन पर केंद्रित है। मेरा मानना है कि हमारे लोगों के साथ व्यक्तिगत संचार व सम्पर्क प्रयासों की स्थायी सफलता सुनिश्चित करने में एक दीर्घ मार्ग तय करते हैं। यही इस पत्रिका से भी परिलक्षित होता है। परियोजना के अंतर्गत गत वर्ष में की गई गतिविधियों के प्रदर्शन से हमारे स्थानीय समाज के साथ लंबे समय तक चलने वाले सहयोग को दर्शाते हैं, जो परियोजना के साथ प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े हुए हैं।

मैं, इस पत्रिका के सफल प्रकाशन और इसके आगामी संस्करणों के लिए परियोजना के अधिकारियों व कर्मचारियों को अपनी शुभकामनाएं देता हूँ। मुझे आशा है कि इस सक्षम टीम के ठोस प्रयास उन्हें हिमाचल प्रदेश के वन सुदूर क्षेत्रों और स्थानीय समुदायों के एक व्यापक खंड के सतत्त पर्यावरण और सामाजिक विकास के परिकल्पित उद्देश्यों को प्राप्त करने में सक्षम बनाएंगे।

(सुखविंदर सिंह सुक्खू)

सुंदर सिंह ठाकुर

मुख्य संसदीय सचिव
(वन, ऊर्जा, पर्यटन व परिवहन), हि.प्र.

संदेश

मुझे यह जानकर हर्ष का अनुभव हो रहा है कि हिमाचल प्रदेश जाइका वानिकी परियोजना द्वारा वर्ष भर होने वाली मुख्य गतिविधियों पर आधारित तीसरी वार्षिक पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है।

हिमाचल प्रदेश की अधिकतर आबादी गाँवों में बसती है जो अपनी दिन प्रतिदिन की घास, चारा तथा जड़ी-बूटियों की आवश्यकताओं के लिए अधिकतर वनों पर निर्भर है। हमारे ग्रामीण समाज को वनों से प्राप्त होने वाली ये सेवाएं दीर्घकाल तक सतत्त रूप से प्राप्त होती रहें, इसके लिए ये आवश्यक है कि जन सहयोग से रिक्त पड़े क्षेत्रों को वनों के तहत लाया जाए और वन आश्रित समाज की आय में भी वृद्धि हो सके। इस दिशा में जाइका वानिकी परियोजना महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

आम लोगों और जाइका परियोजना के मध्य परस्पर संवाद के उद्देश्य से इस वार्षिक पत्रिका का प्रकाशन सराहनीय है।

शुभकामनाओं सहित।

(सुंदर सिंह ठाकुर)

ओंकार शर्मा, भा.प्र.से.
प्रधान सचिव (वन)
हिमाचल प्रदेश ,शिमला -171002

संदेश

यह खुशी की बात है कि हिमाचल प्रदेश जाइका वानिकी परियोजना द्वारा वर्ष 2022-23 की गतिविधियों पर आधारित पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है। जनहित में परियोजना के ऐसे सभी प्रयास एवं गतिविधियां सराहनीय है। हिमाचल प्रदेश के वन उत्तरी भारत की पारिस्थतिकी की संतुलित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अतः यह हमारा कर्तव्य बनता है कि इस समृद्ध प्राकृतिक धरोहर के संरक्षण, संवर्धन और विकास में समाज के प्रत्येक वर्ग का सहयोग लें। जाइका वानिकी परियोजना इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। वन प्रबंधन में समाज के सभी वर्गों विशेषकर निर्बल व वंचित वर्ग की सहभागिता अर्जित करने के लिए ग्राम वन विकास समितियों और स्वयं सहायता समूह के माध्यम से प्रयास किए जा रहे हैं।

मुझे पूरा विश्वास है कि हिमाचल प्रदेश जाइका वानिकी परियोजना द्वारा प्रकाशित की जा रही इस पुस्तिका के माध्यम से हमारे ग्रामीण तथा उनकी सेवा में लगे हमारे अग्रिम पंक्ति के कार्यकर्ताओं को उनके घर द्वार पर इन विकासात्मक गतिविधियों की जानकारी प्राप्त हो पाएगी और जाइका वानिकी परियोजना के लक्ष्यों की प्राप्ति की दिशा में बेहतर नतीजे प्राप्त होंगे।

पुस्तिका के सफल प्रकाशन के लिए अनेक शुभकामनाएं।

धन्यवाद।

(ओंकार शर्मा, भा.प्र.से.)

नागेश कुमार गुलेरिया, भा.व.से.
अतिरिक्त प्रधान मुख्य अरण्यपाल एवं
मुख्य परियोजना निदेशक (जाइका)

संदेश

हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन एवं आजीविका सुधार परियोजना में की जा रही गतिविधियों के तीसरे प्रकाशन का अंक आपको सौंपते हुए मुझे हार्दिक प्रसनता हो रही है।

मेरा मानना है कि हिमाचल प्रदेश में जाइका वानिकी परियोजना के माध्यम से ग्रामीण महिलाओं की आर्थिकी में निरंतर सुधार हो रहा है। परियोजना द्वारा आर्थिक रूप से पिछड़े ग्रामीण समुदाय विशेषकर महिलाओं को आजीविका वर्धन की विभिन्न गतिविधियों से जोड़कर उन्हें आर्थिक रूप से मजबूत करने के हरसंभव प्रयास किए जा रहे हैं। वर्ष 2022 में कांगड़ा जिले को भी इस परियोजना में शामिल किया गया है। अब यह परियोजना हिमाचल प्रदेश के 7 जिलों (किन्नौर ,शिमला ,बिलासपुर, मण्डी, कुल्लू, लाहुल स्पीति व कांगड़ा) के 9 वनवृतों, 22 वनमंडलो, 72 वन परिक्षेत्रों में कार्यन्वित की जा रही है। यह परियोजना ग्रामीण महिलाओं के लिए वरदान साबित हो रही है। परियोजना के अंतर्गत स्वयं सहायता समूहों के सदस्यों को घर द्वार पर उत्तम प्रशिक्षण दिया जा रहा है। हिमाचल प्रदेश जाइका वानिकी परियोजना में 400 से अधिक माइक्रोप्लान व स्वयं सहायता समूहों की आजीविका बढ़ाने के लिए बिजनेस प्लान तैयार किये जा रहे हैं। वित वर्ष 2023 -2024 में 700 से अधिक स्वयं सहायता समूहों को परियोजना से जोड़ने का लक्ष्य रखा है। परियोजना के माध्यम से आजीविका की विभिन्न गतिविधियों जैसे मशरुम उत्पादन, हथकरघा, चीड़ की पतियों से बने सजावटी उत्पाद, सीरा सेपू बड़ी, टौर की पत्तलें बनाकर इन समूहों की आर्थिकी को बढ़ाया जा रहा है।

वनों के अत्यधिक दोहन तथा अन्य कई कारणों से जड़ी-बूटियों के अपघटन की रोकथाम की दिशा में हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन एवं आजीविका सुधार परियोजना" के अतंर्गत जड़ी-बूटी प्रकोष्ठ बेहतरीन कार्य कर रहा है। जड़ी-बूटी प्रकोष्ठ द्वारा ग्राम वन विकास समितियों व जैव-विविधता समितियों के माध्यम से जड़ी-बूटियों के पुर्नउत्थान व संवर्धन की दिशा में अनेक कदम उठाए हैं। इससे जहां एक ओर लुप्त प्रायः होने वाली जड़ी-बूटियों का पुर्नउत्थान संभव हो पाएगा वहीं दूसरी ओर वनों पर आश्रित जनसमुदाय को आय का एक अतिरिक्त साधन सतत् रूप में उपलब्ध होगा। जड़ी-बूटी प्रकोष्ठ ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोगों को वन भूमि और स्थानीय समुदायों की निजी भूमि में औषधीय पौधों की खेती करने हेतु मार्गदर्शन कर रहा है तथा तकनीकी जानकारी उपलब्ध करवा रहा है। जड़ी बूटियों में मुख्यतः प्रजातियों का प्रयोग सफल रहा है। परियोजना के कार्यन्वयन में महत्वपूर्ण निभाने वाले सभी कर्मचारियों का भी मैं धन्यवाद करना चाहता हूँ तथा आग्रह करता हूँ कि वे भविष्य में भी अपना मनोबल ऊँचा रखेंगे व परियोजना को बेहतर बनाने में दिन रात एक कर देंगे।

धन्यवाद।

(नागेश कुमार गुलेरिया, भा.व.से.)

विषय सूची

- परियोजना के अधीन आने वाले जिलों, वन मण्डलों तथा वन परिक्षेत्रों की सूची 03
- हिमाचल प्रदेश जाइका वानिकी परियोजना के लक्ष्य, ध्येय एवं घटक 04
- मुख्य विशेषताएं 05
- मुख्य गतिविधियां 06
- सतत् वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन 07
- पौधशालाओं का सुधार व पौध उत्पादन 35
- सामुदायिक विकास कार्य 41
- 43
- 48
- 51
- जड़ी-बूटी प्रकोष्ठ 53
- आजीविका सुधार 59
- संस्थागत क्षमता सुदृढ़ीकरण 66
- परियोजना की प्रमुख गतिविधियां 71
- मीडिया में परियोजना गतिविधियां 84

परियोजना के अधीन आने वाले जिलों, वन मण्डलों तथा वन परिक्षेत्रों की सूची

जिला	वन मण्डल	वन परिक्षेत्र		वन्य जीव मण्डल	वन्य जीव परिक्षेत्र
बिलासपुर	बिलासपुर	सदर	घुमारवीं		
		स्वारघाट	झडुंता		
मण्डी	मण्डी	द्रंग	कोटली	कुल्लू (वन्य जीव)	सुंदरनगर वन्य जीव परिक्षेत्र (बंदली वन्य प्राणी अभ्यारण्य)
		कटौला	मण्डी		
	नाचन	नाचन			
	सुकेत	बलदवाड़ा	झुंगी		मनाली वन्य जीव परिक्षेत्र (कायस और मनाली वन्य प्राणी अभ्यारण्य)
		कांगू	सरकाघाट		
		जैदेवी	सुकेत		
	जोगिन्द्रनगर	धर्मपुर	लड़भड़ोल		
		जोगिन्द्रनगर	उरला		
		कमलाह			
कुल्लू	कुल्लू	कुल्लू	पतलीकुहल		कुल्लू वन्य जीव परिक्षेत्र कायस और खोखन वन्य प्राणी अभ्यारण्य
		मनाली	नग्गर		
		भुट्टी			
	पार्वती	भुन्तर	जरी		
		हुरला			
	बन्जार(सिराज)	सैंज	तीर्थन		
	आनी	अरसू	नीथर		
लाहौल स्पीति	लाहौल	पटन	केंलाग		1. काजा वन्य जीव परिक्षेत्र (चद्रंताल वन्य प्राणी अभ्यारण को छोड़कर)
किन्नौर	किन्नौर	कटगांव	निचार	स्पीति वन्य जीव	2. ताबो वन्य प्राणी परिक्षेत्र
		भावानगर	मालिंग		
		पूह			
शिमला	शिमला	कोटी	मशोबरा		
		तारादेवी			
	ठियोग	बलसन	ठियोग		
		कोटखाई			
	रोहडू	जुब्बल	खशधार		
		सरस्वतीनगर	डोडराक्वार		
	चौपाल	बमटा	नेरवा		
		चौपाल	सरैन		
		कंडा	थरोच		
	रामपुर	सराहन			
कांगड़ा	नुरपुर	रे	ज्वाली		
		इंदौरा	नुरपुर		
	धर्मशाला	धर्मशाला	शाहपुर		
	पालमपुर	डरोह	जयसिंहपुर		
	देहरा	देहरा	ज्वालामुखी		
		नगरोटा सुरियां			
कुल	**20**	**72**		**2**	**5 वन्य प्राणी वन परिक्षेत्र**

हिमाचल प्रदेश
जाइका वानिकी परियोजना

लक्ष्य

हिमाचल प्रदेश राज्य में सतत् सामाजिक व आर्थि विकास के लिए वनों से उत्पन्न परितन्त्र सेवाओं में सुधार किया जाना है।

परियोजना का ध्येय

परियोजना क्षेत्र में वन पारितन्त्रों का समझे–बूझे कार्य–कलापों द्वारा बेहतर प्रबन्धन प्रदान करना जिससे की वनों में वृद्धि हो, जैव–विविधता का सरंक्षण हो, समुदाय की आजीविका में सुधार एवं संस्थागत क्षमता का सुदृढ़िकरण हो।

परियोजना के घटक

सतत् वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबन्धन

जैव–विविधता संरक्षण

आजीविका सुधार सहयोग

संस्थागत क्षमता सुदृढ़िकरण

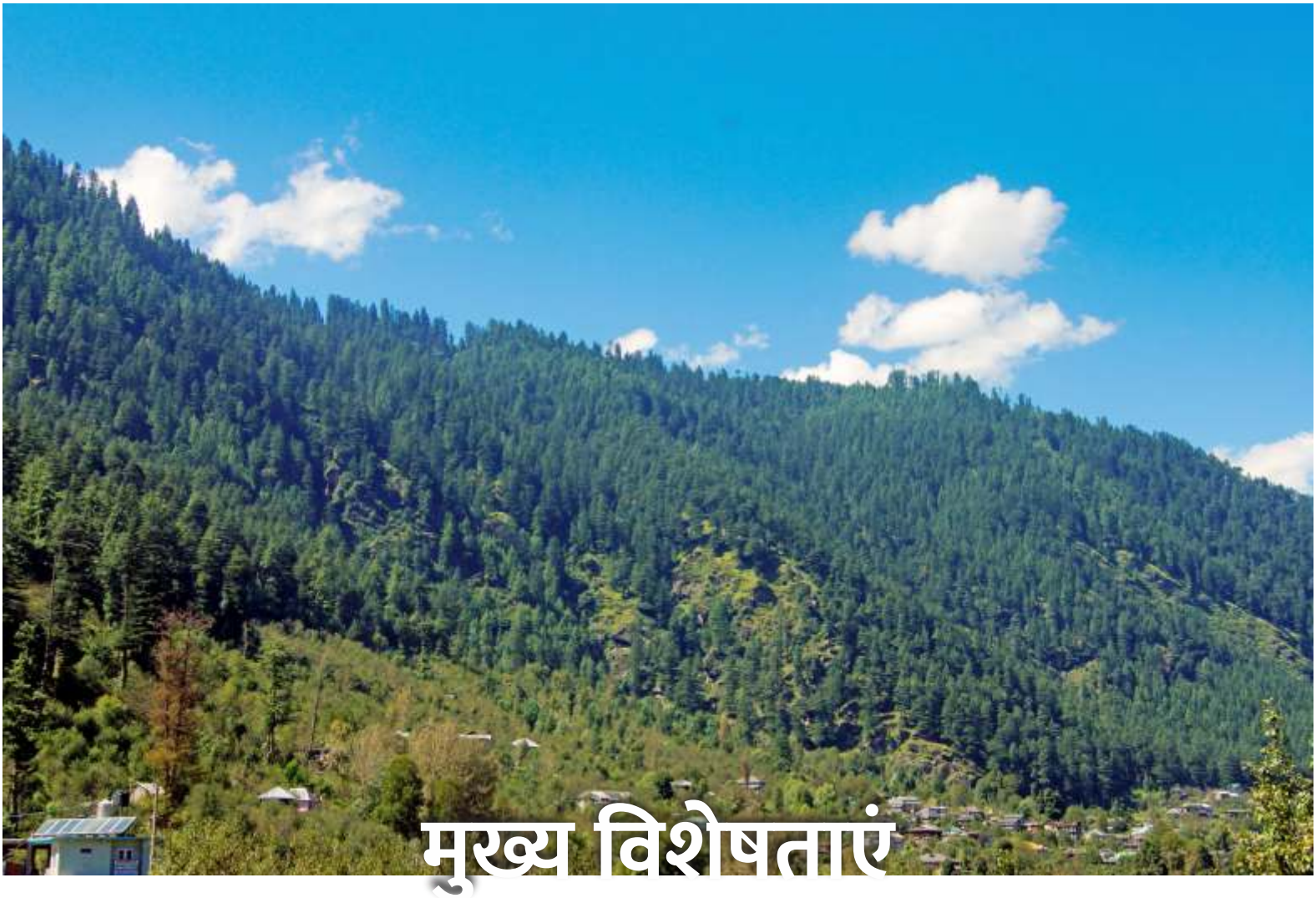

मुख्य विशेषताएं

01 जापान अंतर्राष्ट्रीय सहयोग एजेंसी (JICA) द्वारा वित्त पोषित

02 परियोजना समझौता पत्र पर 29 मार्च, 2018 को टोक्यो-जापान में हस्ताक्षर किए गए

03 800 करोड़ रूपये का कुल परिव्यय (80% ऋण और 20 प्रतिशत राज्य का योगदान)

04 परियोजना अवधिः 10 साल (2018-2019 से 2027-2028), परियोजना को तीन चरणों में विभाजित किया गया है, प्रारंभिक चरण 2 वर्ष, कार्यान्वयन चरण 6 वर्ष और समापन चरण 2 वर्ष

05 परियोजना मुख्यालय शिमला एवं क्षेत्रीय कार्यालय कुल्लू और रामपुर में सात जिलों (किन्नौर, शिमला, बिलासपुर, मण्डी, कुल्लू, कांगड़ा और लाहौल एवं स्पिति) में कार्यान्वित

06 9 वन वृतों के 22 वन मण्डलों के 72 वन परिक्षेत्रों में कार्य किए जा रहे हैं

मुख्य गतिविधियां

समुदाय के साथ विचार-विमर्ष उपरान्त बनाई गई
460 सूक्ष्म योजनाओं
के अनुसार निम्नलिखित गतिविधियां क्रियान्वित की जा रही हैं:-

1 अपघटित वन क्षेत्रों को सघन वन बनाने हेतु पौधारोपण	2 चरागाह सुधार के कार्य	3 मिट्टी एवं जल संरक्षण हेतु कार्य
4 वनों का आग से बचाव	5 खरपतवार नष्ट करने के कार्य	6 मानव-वन्यप्राणी संघर्ष संबन्धित मामलों से निपटने हेतु 16 त्वरित कार्यवाही दल का सृजन
7 जैव-विविधता गलियारे पर अध्ययन	8 जैव-विविधता गणना के लिए बुनियादी अध्ययन	9 सामुदायिक आजीविका सुधार गतिविधियां
10 औषधीय पौधों पर आधारित आजीविका सुधार गतिविधियां जिसके लिए राज्य स्तर पर हिम जड़ी-बूटी प्रकोष्ठ का गठन		11 विभिन्न भागीदारों की क्षमता बढ़ाने हेतु प्रशिक्षण एवं शैक्षणिक यात्राएं आयोजित करने का प्रावधान

सतत् वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन

वनमण्डल पार्वती के वनपरिक्षेत्र भूंतर की ग्राम वन विकास समिति बंसू के स्वयं सहायता वीर कला और ग्राम वन विकास समिति पाहनाला के स्वयं सहायता समूह थान देवता के साथ एक बैठक आयोजित की गयी। जिसमें आय सृजन गतिविधियों हथकरघा के साथ बिक्री, विपणन और रिकॉर्ड जांच के संबद्ध में चर्चा की गई। इस अवसर पर परियोजना सलाहकार डॉ. लाल सिंह और कार्यक्रम प्रबंधक (विपणन) विनोद शर्मा मुख्य रूप से मौजूद रहे।

वनमण्डल पालमपुर के वन परिक्षेत्र जयसिंहपुर की ग्राम वन विकास समिति सिद्ध नागराज की बैठक आयोजित की गई। इस बैठक में पहली गतिविधि के बारे में चर्चा की गई और यह तय किया गया की इसका अनुदान दो किश्तों में प्रदान किया जाएगा। नारी शक्ति और सूर्य दोनों स्वयं सहायता समूहों के आय सृजन गतिविधि को भी अंतिम रूप दिया गया।

वनमंडल धर्मशाला के वनपरिक्षेत्र शाहपुर में ग्राम वन विकास समिति मनोह के स्वयं सहायता समूह (कटिंग टेलरिंग एवं बैग मेकिंग बृजेशबाड़ी) के गठन को लेकर एक बैठक आयोजित की गई।

वनमण्डल शिमला के वनपरिक्षेत्र मशोबरा की ग्राम वाम विकास समिति (मशोबरा-शरई) में ग्रामीण सहभागिता बैठक आयोजित की गई ।

वनमण्डल मण्डी के वनपरिक्षेत्र कटौला की ग्राम वन विकास समिति भेई एवं बिनधार–1 में बैठक आयोजित की गयी। बैठक के एजेंडे में माइक्रो प्लान के तहत सामुदायिक विकास के तहत किए जाने वाले कार्यों का चयन किया गया।

वनमण्डल देहरा के वनपरिक्षेत्र नगरोटा सूरियां की ग्राम वन विकास समिति गठूतर में एक बैठक आयोजित की गई। जिसमें माइक्रोप्लान एवं व्यवसाय योजना के संबंध में चर्चा की गई।

वनमण्डल धर्मशाला के वनपरिक्षेत्र शाहपुर की ग्राम वन विकास समिति बनखंडी माता भालेद के स्वयं सहायता समूह ज्योति और रोशनी के साथ बैठक आयोजित की गई। जिसमें आय सृजन गतिविधि के संबंध में स्वयं सहायता समूह के उपनियमों और अभिलेखों के रखरखाव पर चर्चा की गई और परियोजना से जुड़ने के लिए लोगों को प्रोत्साहित किया गया।

वनमण्डल शिमला के वनपरिक्षेत्र मशोबरा की ग्राम वन विकास समिति मूलकोटि में ग्रामीण सहभागिता अभ्यास कार्यक्रम आयोजित किया गया बैठक आयोजित की गई।

वनमण्डल ठियोग में ग्राम वन विकास समिति खगना–2 बैच 3 के स्वयं सहायता समूह जय ईश्वरी मां के व्यवसाय योजना अनुमोदन के संबंध में बैठक आयोजित की गई। स्वयं सहायता समूह के सभी सदस्यों ने इस महीने के अंत तक कौशल आधारित प्रशिक्षण लेने का निर्णय लिया है।

वनमण्डल व वनपरिक्षेत्र कुल्लू की ग्राम वन विकास समिति बल्ह-द्वितीय और बस्तोरी में परियोजना सलाहकार श्री गिरीश भारद्वाज ने स्वयं सहायता समूहों के सदस्यों के साथ बैठक की और परियोजना से संबंधित विभिन्न विषयों पर चर्चा की।

वनमण्डल नूरपुर की ग्राम वन विकास समिति नागनी और लादोरी के सदस्यों क साथ बैठक आयोजित की गई। जिसमें स्वयं सहायता समूहों के गठन के संबंध में चर्चा की गई।

वनमण्डल देहरा के वनपरिक्षेत्र ज्वालामुखी की ग्राम वन विकास समिति बलहरा में एक बैठक आयोजित की गई। इस बैठक में सूक्ष्म योजना का प्रस्तुतिकरण किया गया।

वनमण्डल किन्नौर के वनपरिक्षेत्र पूह की ग्राम वन विकास समिति सिआसु व रशक्लांग के स्वयं सहायता समूहों के सदस्यों के साथ बैठक आयोजित की गई। बैठक में समूह के सदस्यों को तत्काल बैंक खाता खुलवाने की सलाह दी गई तथा स्वयं सहायता समूहों के उपनियमों, अभिलेखों के रखरखाव और निधि प्रवाह तंत्र के बारे में समूहों के सदस्यों के साथ चर्चा की गई।

वनमण्डल ठियोग में मंडल स्तरीय वन नर्सरी सैंज में एक समीक्षा बैठक आयोजित की गई। इस बैठक में कढैल और घुंडा ग्राम वन विकास विकास समितियों में परियोजना के माधयम से हो रहे कार्यों के बारे में विस्तृत चर्चा की गई। बैठक में परियोजना सलाहकार गिरीश भारद्वाज विशेष, डॉ. ओमपाल शर्मा (हिमाचल वन सेवा, सेवानिवृत) सहित वन विभाग व परियोजना के कर्मचारी मौजूद रहे।

वनमण्डल रामपुर के वनपरिक्षेत्र सराहन की ग्राम वन विकास समिति कंधार- सुघा में एक बैठक आयोजित की गई। इस बैठक का मुख्य उद्देश्य ग्राम वन विकास समितियों के उपनियमों, अभिलेखों के रखरखाव और निधि प्रवाह तंत्र के बारे में विस्तृत चर्चा करना था। इसके अतिरिक्त VFDS को आवंटित विभिन्न नई वृक्षारोपण गतिविधियों के लक्ष्यों पर चर्चा की गई और संबंधित गतिविधियों के लिए समय पर सभी निधियों का उपयोग करने के लिए दिशा निर्देश दिए गए । इस बैठक में श्री सतीश कुमार वन परिक्षेत्रधिकारी, श्री कुंदन नेगी वन खंड अधिकारी सराहन, एस. एम.एस. गरिमा वर्मा सहित वन विभाग व परियोजना के अन्य कर्मचारी तथा ग्राम वन विकास समिति के सदस्य मौजूद रहे।

कांगड़ा जिले को जाइका वानिकी परियोजना में शामिल करने पर 29 मार्च, 2022 को धर्मशाला वन वृत्त की एक दिवसीय वृत्त स्तरीय बैठक का आयोजन अतिरिक्त प्रधान मुख्य अरण्यपाल एवं मुख्य परियोजना निदेशक (जाइका) श्री नागेश कुमार गुलेरिया की अध्यक्षता में धर्मशाला में किया गया।

जिसमें उन्होंने प्रतिभागियों को परियोजना के बारे में विस्तृत जानकारी दी तथा मौके पर ही उनके प्रश्नों का समाधान किया। उन्होंने प्रतिभागियों से आह्वान किया कि वे हिमाचल प्रदेश जैसे संवेदनशील हिमालयी राज्य के वन पारिस्थितिकी तंत्र के प्रबंधन और आजीविका में सुधार के लिए जाइका वानिकी परियोजना का पूरा लाभ उठाएं जिससे की वन आश्रित समाज भी अपनी आर्थिकी को मजबूत कर सके। इस बैठक में सी.सी.एफ. धर्मशाला और डीएफओ धर्मशाला, पालमपुर, देहरा सहित संबंधित वन मण्डलों के वन परिक्षेत्र अधिकारियों ने भाग लिया।

सुकेत वन मण्डल के कांगू वन परिक्षेत्र की ग्राम वन विकास समिति रोपा बंदला के स्वयं सहायता समूहों के साथ परियोजना के कर्मचारियों ने बैठक की जिसमें सदस्यों के साथ सीधे संवाद के माध्यम से परियोजना गतिविधियों सम्बन्धी प्रगति की जानकारी ली गई और मशरूम की खेती जैसी व्यावसायिक योजना और सामुदायिक विकास कार्यों पर भी विचार – विमर्श किया गया। साथ ही उन्होंने समूहों के द्वारा किए जा रहे कार्यों पर संतोष व्यक्त करते हुए जाइका परियोजना की ओर से हर सम्भव सहयोग का आश्वासन दिया।

दिनांक 07.04.2022 को जाइका वानिकी परियोजना की आम सभा की दूसरी बैठक आयोजित प्रधान मुख्य अरण्यपाल (वन बल प्रमुख) श्री अजय श्रीवास्तव द्वारा की अध्यक्षता में की गई। इसमें वन विभाग के विभिन्न वरिष्ठ अधिकारियों के अतिरिक्त अन्य विभागों के प्रतिनिधियों ने भी भाग लिया। शिमला से बाहर के सदस्य आभासी माध्यम से बैठक से जुड़े रहे। अतिरिक्त प्रधान मुख्य अरण्यपाल एवं मुख्य परियोजना निदेशक (जाइका) श्री नागेश कुमार गुलेरिया ने आम सभा के सदस्यों तथा आभासी माध्यम से जुड़े अधिकारियों को वर्ष 2021-22 के दौरान परियोजना के तहत संचालित विभिन्न विकासात्मक गतिविधियों की प्रगति की विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत की।

वन मण्डल व वन परिक्षेत्र ठियोग की ग्राम पंचायत सैंज के बलेना (जराशी) वार्ड में एक दिवसीय जागरूकता बैठक का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता ग्राम पंचायत सैंज के प्रधान श्री प्रेम दत्त शर्मा ने की। इस बैठक में उक्त वार्ड और ग्राम पंचायत के लोगों ने भाग लिया।

परियोजना के कर्मचारियों ने उपस्थित ग्रामीणों को जाइका वानिकी परियोजना के उद्देश्यों, ग्राम वन विकास समिति के गठन, सूक्ष्म योजना को तैयार करने, ग्राम वन विकास समिति की भूमिकाएं,

जिम्मेदारियां, बहीखाता रख-रखाव, नकद प्रबंधन, स्वयं सहायता समूह के गठन के बारे में विस्तृत जानकारी दी तथा उनको आ रही समस्याओं का मौके पर ही समाधान किया। बैठक में उपस्थित लोगों को ग्रामीण सहभागिता समीक्षा टूल्स पर एक फिल्म भी दिखाई गई।

विश्वव्यापी कोविड-19 महामारी से पूरे विश्व के साथ-2 भारतवर्ष सहित हिमाचल प्रदेश भी ग्रसित रहा जिसके कारण जन-जीवन की वित्तीय स्थिति दयनीय हुई है। इस महामारी के कारण हिमाचल प्रदेश के आबादी के लिहाज से सबसे बड़े जिला कांगड़ा के लोगों के जीवन स्तर पर भी बहुत बुरा असर पड़ा है। इस बात को ध्यान में रखते हुए वन, युवा सेवाएं एवं खेल मंत्री श्री राकेश पठानिया के अथाह प्रयासों से कांगड़ा जिले को परियोजना में शामिल करने के लिए हि.प्र. सरकार ने भारत सरकार को एक प्रस्ताव भेजा था जिसमें छः जिलों बिलासपुर, मंडी, कुल्लू, लाहौल एवं स्पिति, किन्नौर और शिमला पहले से चल रही जापान अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग एजेंसी (JICA) द्वारा वित-पोषित वानिकी परियोजना में कांगड़ा जिला को भी शामिल किए जाने का आग्रह किया गया था ताकि कोविड-19 की वजह से कांगड़ा जिला के लोगों के जनजीवन पर जो बुरा प्रभाव पड़ा है उसको कुछ हद तक कम किया जा सके।

इस परिप्रेक्षय में हि.प्र. सरकार ने कांगड़ा जिला के अन्तर्गत धार्मशाला वन वृत के तीनों वन मंडलों (नूरपुर, धर्मशाला व पालमपुर) तथा हमीरपुर वन वृत के एक वन मंडल (देहरा) के 11 वन परिक्षेत्रें को शामिल किया गया है। जिसका कार्यान्वयन वित्तीय वर्ष 2022-23 से शुरू कर दिया गया है। इस तरह से अब यह परियोजना हि.प्र. के 7 जिलों के अन्तर्गत 22 वनमंडलों, जिसमें 20 क्षेत्रेय व 2 वन्य प्राणी वनमंडल शामिल है, के 72 वन परिक्षेत्रें, जिसमें 67 क्षेत्रेय एवं 5 वन्य प्राणी परिक्षेत्र शामिल हैं, में क्रियान्वित की जा रही है।

इस कार्यशाला में उपस्थित प्रशिक्षुओं को समन्वयक श्री वी.पी. पठानिया हि.प्र.व.से.(से.नि.) व श्री एस.के. गुलेरिया हि.प्र.व.से. (से.नि.) द्वारा ग्राम वन विकास समितियों के गठन, शक्तियों, कर्तव्य व सूक्ष्म योजनाओं को तैयार करने संबंधी विस्तृत जानकारी गई दी गई।

इससे पूर्व श्री विनोद शर्मा, कार्यक्रम प्रबंधक (विपणन और ग्रामीण वित्तपोषण) ने जाइका वानिकी परियोजना के उद्देश्यों, घटकों तथा उनसे होने वाले लाभों की विस्तृत जानकारी प्रशिक्षुओं से साझा की। इस कार्यशाला में श्री प्रवीण कुमार एम. आई.एस. एसोसिऐट ने प्रशिक्षुओं को दृश्य एवं श्रवण के माध्यम से शिक्षण सामग्री जुटाने में तकनीकी सहयोग दिया। इस अवसर पर सहायक अरण्यपाल देहरा श्री संदीप कोहली और श्री विजय विषय विशेषज्ञ भी उपस्थित रहे।

परियोजना के कर्मचारियों ने वन मण्डल बिलासपुर के वन परिक्षेत्र झंडूत्ता की ग्राम वन विकास समिति संगम के सदस्यों के साथ मलारी में मासिक बैठक की जिसमें परियोजना के कर्मचारियों ने समूह के सदस्यों के साथ विभिन्न मुद्दों पर विस्तृत चर्चा की ।

कुल्लू वन मण्डल के मनाली वन परिक्षेत्र में परियोजना के कर्मचारियों ने ग्राम वन विकास समिति कोठी के सदस्यों के साथ बैठक की। जिसमें उन्होंने समूह के सदस्यों को विभिन्न आजीविका गतिविधियों, आय सृजन के संबंध में विस्तार से जानकारी दी तथा समूह में चलाई जा रही गतिविधियों पर भी चर्चा की।

जाइका वानिकी परियोजना द्वारा स्वयं सहायता समूहों, विषेशकर महिलाओं हेतु प्रदेश में विभिन्न कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। इसी कड़ी में ठियोग वन मण्डल की टिक्कर ग्राम वन विकास समिति के जागृति एवं आस्था स्वयं सहायता समूह की महिलाओं के साथ परियोजना स्टाफ द्वारा समय-समय पर बैठकें की गई तथा उन्हें आजीविका वर्धन गतिविधि को चयनित करने तथा उसके प्रशिक्षण सम्बन्धी सहयोग परियोजना द्वारा दिया गया। परियोजना के प्रावधान के अनुसार पूर्णरूप से महिला संचालित समूहों को व्यावसायिक योजना का 75 प्रतिशत परियोजना द्वारा वित्तपोषत किया जा रहा है तथा 25 प्रतिशत समूह अंशदान के रूप में दे रहा है।

परियोजना के कर्मचारियों ने किन्नौर वन मण्डल के निचार वन परिक्षेत्र की ग्राम वन विकास समिति बरी के तहत गठित जागृति स्वयं सहायता समूह सदस्यों के साथ बैठक की। बैठक में विभिन्न गतिविधियां की गई:

- ग्राम वन विकास समिति द्वारा तैयार व्यावसायिक योजनाओं की शेष औपचारिकताऐं पूरी कर उन्हें स्वीकृति प्रदान की गई।
- स्वयं सहायता समूह से सम्बंधित रजिस्टरों को भरने के विषय में जानकारी दी गई।
- इंटर लोनिंग के बारे में जानकारी दी गई।

दिनांक 20-04-2022 को मलान विश्राम गृह में जाइका वानिकी परियोजना के सौजन्य से पालमपुर व धर्मशाला वन मण्डलों के खण्ड अधिकारियों, परिक्षेत्र अधिकारियों व वन रक्षकों के लिए परियोजना के तहत ग्राम वन विकास समितियों के गठन व सुक्ष्म योजनाओं को तैयार करने सम्बन्धी एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। परियोजना के तहत पालमपुर वन मण्डल के डरोह व जयसिंहपुर वन परिक्षेत्र तथा धर्मशाला वन मण्डल के शाहपुर व धर्मशाला वन परिक्षेत्र को चिन्हित किया गया है। कार्यशाला की अध्यक्षता करते हुए अतिरिक्त प्रधान मुख्य अरण्यपाल एवं मुख्य परियोजना निदेशक (जाइका) श्री नागेश कुमार गुलेरिया, भा.व.से. ने प्रशिक्षुओं को जाइका वानिकी परियोजना की विस्तृत जानकारी दी। इस कार्यशाला में उपस्थित प्रशिक्षुओं को ग्राम वन विकास समितियों के गठन, शक्तियों, कर्तव्य व सूक्ष्म योजनाओं को तैयार करने संबंधी विस्तार से जानकारी दी।

किन्नौर वन मण्डल के भावानगर परिक्षेत्र की ग्राम वन विकास समिति जनि के तहत गठित गन्धर्वा व दुर्गा माता स्वयं सहायता समूह सदस्यों के साथ परियोजना के कर्मचारियों ने बैठक की। जिसमें उन्होंने समूहों द्वारा तैयार की गई हथकरघा खड़ी और वर्मीकम्पोस्ट व्यावसायिक योजनाओं की शेष औपचारिकताऐं पूरी की तथा उन्हें आम सभा में अनुमोदित किया गया।

हिमाचल प्रदेश सरकार जाइका वानिकी परियोजना के माधयम से प्रदेश के ग्रामीणों, विषेशकर महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए विभिन्न कार्यक्रम कर रही है। इसी के चलते ठियोग वन मण्डल के कोटखाई वन परिक्षेत्र के तहत गठित ग्राम वन विकास समिति बागी-1 (बैच-II) के कृषक और जय भाल शक्ति स्वयं सहायता समूह सदस्यों के साथ गांव बागी में परियोजना के कर्मचारियों ने बैठक की। सुश्री नानिका सुमन क्षेत्रीय तकनीकी इकाई समन्वयक ने बैठक की सुविधा प्रदान करते हुए संबंधित स्वयं सहायता समूह सदस्यों द्वारा उठाए गए विभिन्न मुद्दों को हल किया और प्रतिभागियों को परियोजना की अवधारणा सम्बन्धी जानकारी दी।

वन मण्डल जोगिन्द्रनगर के उरला वन परिक्षेत्र में श्री वी.एस. यादव, एच.पी.एफ.एस. (सेवानिवृत्त) की अध्यक्षता में एक बैठक आयोजित की गई जिसमें ग्राम वन विकास समितियों में चलाई जा रही जाइका वानिकी परियोजना की गतिविधियों पर चर्चा की गई और उन्हें आ रही समस्याओं का मौके पर ही समाधान किया। बैठक में ग्राम वन विकास समितियों व स्वयं सहायता समूह को मजबूत करने और रिकॉर्ड के रखरखाव पर भी बल दिया। इस दौरान श्री पृथ्वी प्रखंड अधिकारी, वन रक्षक, एफ.टी.यू. समन्वयक, वार्ड फैसिलेटर और ग्राम वन विकास समितियों के प्रधानों ने भी भाग लिया।

वन मण्डल व वन परिक्षेत्र ठियोग की ग्राम वन विकास समिति धार (खाशधार), बैच-III की आम सभा धार (खशधार) गांव में आयोजित की गई। इस बैठक में ग्राम वन विकास समिति के पंजीकरण संबंधी कागजात मौके पर ही पूरे किये गये तथा जाइका वानिकी परियोजना की पूरी अवधारणा पर सभी सदस्यों के साथ चर्चा की गई। नव निर्वाचित ग्राम वन विकास समिति के अध्यक्ष श्री अंकुश ठाकुर ने अपने वार्ड को इस तरह की प्रतिष्ठित परियोजना का हिस्सा बनाने के लिए जाइका अधिकारियों और डीएफओ ठियोग को धन्यवाद दिया।

परियोजना के कर्मचारियों ने वन मण्डल व वन परिक्षेत्र जोगिन्द्रनगर में गठित ग्राम वन विकास समिति झीमझीमा के सदस्यों के साथ मासिक बैठक की जिसमें उन्होंने समूह के सदस्यों को विभिन्न आजीविका गतिविधियों, आय सृजन गतिविधियों के संबंध में विस्तृत जानकारी दी तथा समूह में चलाई जा रही गतिविधियों पर भी चर्चा की। साथ ही ग्रामीणों को स्वयं सहायता समूहों के गठन एवं उनकी उपयोगिता की भी जानकारी दी।

जाइका वानिकी परियोजना के सलाहकार श्री गिरिश भारद्वाज ने आनी वन मंडल के बैच –1 के अंतर्गत गठित ग्राम वन विकास समिति जाझर का दौरा किया जिसमें उन्होंने समिति के प्रतिनिधियों और समिति के तहत गठित स्वयं सहायता समूहों के साथ भी बैठक की। परियोजना सलाहकार ने ग्राम वन विकास समिति और स्वयं सहायता समूह के कामकाज और प्रदर्शन की समीक्षा की, परियोजना टीम लीडर ने अभिसरण योजना सहित कार्यान्वयन रणनीतियों की भी चर्चा की।

वन मण्डल शिमला के तारा देवी वन परिक्षेत्र की 5 ग्राम वन विकास समितियों के सदस्यों के साथ वन विभाग के अधिकारियों ने अग्नि सुरक्षा के सर्वोत्तम प्रबन्धन के लिए एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया, इसके अलावा स्वयं सहायता समूहों के अन्य मुद्दों को भी अधिकारियों के द्वारा सुना गया।

ठियोग वन मण्डल के कृषक और बाल शक्ति स्वयं सहायता समूह, बैच-II कोटखाई वन परिक्षेत्र की आम सभा आज बागी गांव में आयोजित की गई। बाल शक्ति समूह के 14 सदस्यों ने सर्वसम्मति से सुश्री कौशल्या को अध्यक्षा, सुश्री रेखा को सचिव, सुश्री बीना को कोषाध्यक्ष नियुक्त किया गया है। इसी प्रकार कृषक स्वयं सहायता समूह के 10 सदस्यों ने ग्राम वन विकास समिति के अध्यक्ष बाघी-1 की उपस्थिति में सर्वसम्मति से सुश्री जमना देवी को अध्यक्ष, सुश्री डिंपल को सचिव और सुश्री रीना को समूह का कोषाध्यक्ष चुना, बीर सिंह सचिव, सुश्री कृष्णा और श्री. अभिषेक सदस्य चुने गये। इस कार्य में जाइका और क्षेत्रीय तकनीकी इकाई कोटखाई की संयुक्त टीम ने सहयोग किया। सुश्री नानिका सुमन क्षेत्रीय तकनीकी इकाई समन्वयक कोटखाई रेंज ने स्वयं सहायता समूह सदस्यों को वन आश्रित समुदाय की आय बढ़ाने के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए जाइका अवधारणा और स्वयं सहायता समूहों की भूमिका के बारे में जानकारी दी। साथ ही, प्रतिभागियों को जंगल की आग के जोखिमों और बचाव हेतु जानकारी दी गई।

जापान अन्तराष्ट्रीय सहयोग एजेन्सी द्वारा वित पोषित परियोजना हिमाचल प्रदेश के 7 जिलों किनौर, कुल्लू, शिमला, बिलासपुर, मण्डी, कांगडा और लौहाल-स्पिति में मार्च 2018 से कार्यान्वित है, इसी कड़ी में ग्राम वन विकास समिति रोपड़ी रेन्ज जोगिन्द्रनगर में स्वयं सहायता समूह के साथ परियोजना कर्मचारियों ने बैठक आयोजित की। इस बैठक में स्वयं सहायता समूह के सदस्यों को आय बढ़ाने व व्यावसायिक योजना के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। साथ ही, उन्हें व्यक्तिगत प्रशिक्षण कार्यक्रम के बारे में भी जानकारी दी गई।

जाइका परियोजना के अंतर्गत किन्नौर वन मण्डल के कटगांव वन परिक्षेत्र के रोचरंग-कचरंग और कंदार के ग्राम वन विकास समिति और स्वयं सहायता समूह के सदस्यों के साथ परियोजना कर्मचारियों ने बैठक आयोजित की। जिसमें उन्होंने स्वयं सहायता समूहो के उप-नियमों, रिकॉर्ड के रखरखाव और फंड फ्लो मैकेनिज्म के बारे में विस्तृत चर्चा की। राज्य में लंबे समय तक सूखे की स्थिति, निवारक उपचारात्मक उपायों और जंगल की आग को रोकने और नियंत्रित करने में कटगाँव वन परिक्षेत्र के फील्ड स्टाफ के साथ पूर्ण सहयोग देने से जंगल की आग की घटनाओं के प्रतिकूल प्रभाव भी उनके साथ साँझा किए गए।

जोगिन्द्रनगर वन मण्डल के धर्मपुर वन परिक्षेत्र के अंतर्गत ग्राम वन विकास समिति चौकी में जाइका वानिकी परियोजना की बैठक का आयोजन किया गया जिसमें परियोजना के माध्यम से होने वाले कार्यों पर चर्चा की गई व गर्मियों में जंगल में लगने वाली आग को कैसे नियंत्रित किया जाए इस बारे में लोगों को जागरूक किया गया और स्वयं सहायता समूहों से व्यावसायिक योजना व उनकी आय में वृद्धि हो इस बारे में भी चर्चा की गई।

ठियोग वन मण्डल के कोटखाई वन परिक्षेत्र बैच-II की ग्राम वन विकास समिति (वीएफडीएस) थाना के लक्ष्य एवं जागृति स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) की बैठक थाना गांव में आयोजित की गई। जिसमें परियोजना कर्मचारियों ने समूहों के रिकॉर्ड की जांच की और आय सृजन गतिविधि (आईजीए) व्यावसायिक योजना तय करने के लिए प्रेरित किया। 33 घरों के प्रतिनिधियों को उनके आसपास के क्षेत्र में जंगल की आग को रोकने के लिए निवारक उपायों के बारे में जानकारी दी गई। सभी हितधारकों को अपने क्षेत्र में आग लगने की स्थिति में आग बुझाने के संचालन में भाग लेने और ऐसे कार्यों में समूहों का समर्थन करने के लिए भी प्रेरित किया गया।

परियोजना कर्मचारियों ने ग्राम वन विकास समिति सारगा के सदस्यों के साथ बैठक की जिसमें उन्होंने समिति के तहत गठित स्वयं सहायता समूहों की आजीविका वृद्धि हेतु विस्तृत चर्चा की। इस बैठक में मौजूद लोगों को जंगल को आग से बचाने के लिए भी प्रेरित किया गया व लोगों ने जाइका वानिकी परियोजना के बारे में अधिकारियों से खुलकर सवांद किया।

किनौर वन मण्डल के भाबानगर वन परिक्षेत्र की ग्राम वन विकास समिति बारा काम्बा व चौरा के अंतर्गत गठित स्वयं सहायता समूहों के साथ जाइका वानिकी परियोजना व वन विभाग के अधिकारियों व कर्मचारियों ने एक बैठक की जिसमें परियोजना के माध्यम से होने वाली गतिविधियों की जानकारी लोगों को दी गई। जाइका परियोजना में प्रोग्राम मैनेजर (मार्केटिंग व रूरल फाइनेंसिग) श्री विनोद शर्मा ने स्वयं सहायता समूहों को लोन व आय सृजन गतिविधियों के बारे में बारीकी से जानकारी दी।

रामपुर वन मंडल के सराहन वन परिक्षेत्र के अंतर्गत निर्मित ग्राम वन विकास समिति लबाना- सदाना की आम सभा का आयोजन RO सराहन तथा VFDS प्रधान की अध्यक्षता में किया गया। इस बैठक का मुख्य उद्देश्य कार्यकारी समिति का पुनर्गठन करना था । बैठक में सर्वसम्मति से निम्नलिखित कार्यकारी समिती का चयन किया गया :-

1 . प्रधान - श्रीमति मधुबाला

2 . उप प्रधान- श्रीमति मंगला देवी

3 . सचिव- श्री जवार सिंह

4 . सह-सचिव- श्री सुरेंद्र सिह

इस आम सभा में जाइका द्वारा दो वर्ष के कार्यकाल में हुए कार्यों पर विस्तृत चर्चा की गई।

वन मण्डल किन्नौर के मल्लिंग वन परिक्षेत्र के ग्राम वन विकास समिति हैंगो के सदस्यों के साथ परियोजना के कर्मचारियों ने बैठक की। यह हंग-रंग घाटी का आखिरी गांव है। JICA परियोजना के उद्देश्यों और घटकों को ग्राम वन विकास समिति के सदस्यों के साथ साझा किया गया और साथ ही स्वयं सहायता समूह के गठन के संबंध में भी विस्तृत चर्चा की गई। तत्पश्चात दो स्वयं सहायता समूहों का गठन किया गया और आय सृजन गतिविधियों को भी अंतिम रूप दिया गया। स्वयं सहायता समूहों के उप-नियमों, अभिलेखों के रखरखाव और निधि प्रवाह तंत्र को भी उनके साथ साझा किया गया।

जोगिन्दरनगर वन परिक्षेत्र के वार्ड फैसिलिटेटर्स के साथ परियोजना कर्मचारियों ने एक बैठक आयोजित की जिसमें उन्होंने ग्राम वन विकास समिति और स्वयं सहायता समूहों को रिकॉर्ड रखने में मदद करने, मिट्टी और जल संरक्षण कार्य की उचित फोटो के साथ रिपोर्ट बनाने बारे विस्तृत चर्चा की।

वनमण्डल कुल्लू में ग्राम वन विकास समिति जॉली के स्वयं सहायता समूहों नैना और गणपति के साथ बैठक की गई। इस बैठक में दोनों समूहों के सदस्यों के साथ आय सृजन गतिविधियों (हथकरघा और कढ़ाई और सिलाई), रिकॉर्ड रखने, प्रशिक्षण और विपणन के बारे में विस्तृत चर्चा की गई। इस बैठक में सभी सदस्यों ने सक्रिय रूप से भाग लिया और प्रशिक्षण के संबंध में अपने अनुभव साझा किए। मार्केटिंग के पहलुओं को प्रोग्राम मैनेजर विनोद शर्मा और मार्केटिंग मैनेजर जड़ी बूटी सेल मोहित शर्मा ने लोगों को विस्तृत रूप से जानकारी दी।

General house meeting of VFDS Gulehad on dated 10-08-22-constitited VFDS Gulehad-Explained project and project activities in detail-Pradhan Smt-Neelam Rana chaired the meeting-R-O-Jaisingpur (Palampur Divison) Local B-O-and Forest Guard also attended the meeting.

JICA वानिकी परियोजना के अंतर्गत वनमण्डल शिमला के वन परिक्षेत्र कोटी की बढ़ेच पंचायत में वन ग्राम विकास समिति के गठन को लेकर बैठक हुई, जिसमें कोट दवारु नाम से वन ग्राम विकास समिति का सर्व सहमति से गठन किया गया। इस बैठक में एस एम एस योशा सोलंकी , एफ. टी. यू कोऑर्डिनेटर सहित वन विभाग व परियोजना के कर्मचारी मौजूद रहे।

अतिरिक्त प्रधान मुख्य अरण्यपाल एवं मुख्य परियोजना निदेशक श्री नागेश कुमार गुलेरिया की अध्यक्षता में रामपुर वनमण्डल के वन विश्राम गृह सराहन में JICA टीम के साथ एक बैठक का आयोजन किया गया। इसमें परियोजना से संबंधित गतिविधियों पर चर्चा की गई एवं जाइका परियोजना के तहत कार्यो की प्रगति की समीक्षा की तथा मुख्य परियोजना निदेशक द्वारा आगामी कार्यों के लिए दिशा–निर्देश भी दिए गए।

वन विश्राम गृह शोल्टू में वनमण्डल किन्नौर के भावानगर वन परिक्षेत्र के ग्राम वन विकास समिति जानी के स्वयं सहायता समूहों के सदस्यों के साथ परियोजना कर्मचारियों ने बैठक की। जिसमें उन्होंने स्वयं सहायता समूहों के उपनियमों, अभिलेखों के रखरखाव और निधि प्रवाह तंत्र को फिर से उनके साथ साझा किया। समूह द्वारा रखे गए रिकार्ड की भी जांच की गई। समूह सदस्यों ने अगले महीने के दौरान स्थानीय प्रशिक्षक से कौशल आधारित प्रशिक्षण प्राप्त करने का निर्णय लिया है।

परियोजना कर्मचारियों ने वनमण्डल शिमला की ग्राम वन विकास समिति भराड़ी के सदस्यों के साथ एक बैठक की जिसमें उन्होंने स्वयं सहायता समूह के गठन और सूक्ष्म योजना के लिए डेटा संग्रह के संबंध में चर्चा की गई।

वनमण्डल ठियोग के वन परिक्षेत्र कोटखाई के ग्राम थाना में बैच-II के तहत पुरुष स्वयं सहायता समूह लक्ष्य और महिला समूह जय शाली मां की बैठक आयोजित की गई। दोनों स्वयं सहायता समूहों की व्यावसायिक गतिविधियों को परियोजना कर्मचारियों की सहायता से अंतिम रूप दिया गया तथा उसे सर्वसम्मित से स्वीकृति प्रदान की गई।

जाइका वानिकी परियोजना टीम ने वनमण्डल धर्मशाला के अधिकारियों व कर्मचारियों के साथ एक बैठक का आयोजन किया। जिसमें उन्होंने लक्षित समूहों की पहचान/चयन, सामुदायिक लामबंदी, सूक्ष्म योजना और व्यावसायिक योजना की तैयारी, सदस्यता शुल्क का संग्रह, स्वयं सहायता समूहों का गठन, नर्सरी विकास इत्यादि परियोजना गतिविधियों पर चर्चा की।

वन मण्डल मण्डी के वन परिक्षत्र कटौला में ग्राम वन विकास सिमिति निशु पार्नु और डुहकी में आम सभा का आयोजन किया गया। इसमें परियोजना के अंतर्गत हुए का कार्यों और वानिकी संबंधित गतिविधियों पर चर्चा की गई एवं परियोजना के तहत कार्यों की प्रगति की समीक्षा और सूक्ष्म योजना में दिए गए सामाजिक विकास कार्यों को चयनित किया गया।

वनमण्डल जोगिंदरनगर मुख्यालय में वन विभाग के अधिकारियों, कर्मचारियों व परियोजना कर्मचारियों की मासिक बैठक सम्पन हुई। इस बैठक में क्षेत्र में चल रहे कार्यों की प्रगति और जाइका कार्यों के रख रखाव, स्वयं सहायता समूहों के प्रशिक्षण पर विस्तार से चर्चा की गयी। इस अवसर पर वनमंडलाधिकारी श्री राकेश कटोच, श्री बी.एस. यादव (हिमाचल वन सेवा, सेवानिवृत) विशेष रूप से मौजूद रहे।

ठियोग वनमण्डल के वनपरिक्षेत्र बालसन की ग्राम वन विकास समिति काशना के स्वयं सहायता समूह राधा कृष्ण मंदिर और ज्ञान ज्योति की एक संयुक्त बैठक आयोजित की गई जिसमें समिति के सदस्यों, एफटीयू कर्मचारियों और जाइका टीम ने भाग लिया। आय सृजन गतिविधियों को शुरू करने से संबंधित विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की गई और मौके पर ही समूह के सदस्यों को आ रही बाधाओं को दूर किया गया।

वनमण्डल धर्मशाला के वन परिक्षेत्र शाहपुर के ग्राम वन विकास समिति कनोल में स्वयं सहायता समूहों के गठन को लेकर बैठक आयोजित की गई। इस बैठक में एसएमएस, एफटीयू समन्वयक, वन रक्षक एवं ग्राम वन विकास समिति के सदस्य उपस्थित रहे।

जड़ी-बूटी प्रकोष्ठ

वनों से अत्यधिक दोहन तथा अन्य कई कारणों से जड़ी-बूटियों के अपघटन की रोकथाम की दिशा में जाइका वित् पोषित 'हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन एवं आजीविका सुधार परियोजना' के अतंर्गत पीएमयू स्तर पर जड़ी-बूटी प्रकोष्ठ का गठन किया गया है। जड़ी-बूटी प्रकोष्ठ द्वारा ग्राम वन विकास समितियों व जैव-विविधता समितियों के माध्यम से जड़ी-बूटियों के पुर्नउत्थान व संवर्धन की दिशा में अनेक कदम उठाए जा रहे हैं। इससे जहां एक ओर लुप्त प्राय: होने वाली जड़ी-बूटियों का पुर्नउत्थान संभव हो पाएगा वहीं दूसरी ओर वनों पर आश्रित जन समुदाय को आय का एक अतिरिक्त साधन सतत् रूप में उपलब्ध हो पाएगा। राज्य में पहली बार इस तरह के जड़ी-बूटी प्रकोष्ठ का गठन किया गया है जोकि ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोगों को वन भूमि और स्थानीय समुदायों की निजी भूमि में औषधीय पौधों की खेती करने हेतु मार्गदर्शन करेगा। यह प्रकोष्ठ स्थानीय समुदायों को औषधीय पौधों की खेती को बढ़ावा देने हेतु विभिन्न स्तरों पर तकनीकी जानकारी उपलब्ध करवाएगा। इसके अलावा सरकार द्वारा चलाई गई महत्वाकांक्षी ''वन समृ(, जन समृ('' योजना के उद्देश्यों को पूरा करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान देगा।

जड़ी-बूटी प्रकोष्ठ का लक्ष्य: आजीविका समर्थन, आसान बाजार पहुंच और गैर-काष्ठ वन उत्पादों (एन.टी.एफ.पी.) का संरक्षण (इन सीटू/एक्स सीटू में) करना।

जड़ी बूटी प्रकोष्ठ लगातार विभिन्न औषधीय पौधों की प्रजातियों के जंगली स्टॉक के प्रसार और संरक्षण में कार्यरत है। इसके परिणामस्वरूप परियोजना क्षेत्रों में हितधारक समुदायों के लिए आय के संभावित स्रोत के रूप में ये प्रजातियां उभरी हैं। हरड़ (टर्मिनलिया चेबुला), आंवला (एम्ब्लिका ऑफिसिनैलिस) और रीठा (सपिंडस मुकोरोसी) की ग्राफ्टेड प्रजातियों एवं शतावरी (शतावरी रेसमोसस), घृतकुमारी (एलोवेरा), चिरायता (स्वर्टिया कॉर्डेटा) और कुटकी (पिकरोहिजा कुरूआ) के प्रसार मॉडलों को परियोजना क्षेत्र में सफलतापूर्वक लागू किया जा रहा है। निकट भविष्य में, जड़ी बूटी प्रकोष्ठ का लक्ष्य इन मॉडलों को अन्य परियोजना क्षेत्रों में दोहराने का है। इसके अतिरिक्त तेल निकालने के लिए पामारोसा घास का भी प्रायोगिक आधार पर प्रवर्धन किया गया है। जड़ी बूटी प्रकोष्ठ के उद्यमिता विकास मॉडल जिसमें की टौर (बौहिनिया वाहलाई) के पत्तों का उपयोग करके प्लेट बनाने का प्रावधान है, उसमें व्यापार में शामिल समाज के वंचित वर्गों की अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने की बड़ी क्षमता है।

सुकेत वन मण्डल में ग्राफ्टेड पौधें (700 हरड़, 300 आंवला, 300 रीठा) लगाए गए हैं, जो पारंपरिक पौधों के लिए 10 साल के मुकाबले चौथे साल में उपज देना शुरू कर देंगे। परियोजना क्षेत्र में लगाए गए ग्राफ्टेड हरड़, आंवला और रीठा के पौधों का जीवित रहने का प्रतिशत क्रमश: 90, 95 और 90 है। खेत में हरड़, आंवला और रीठा के मौजूदा वृक्षारोपण के स्थान पर ग्राफ्टिंग की भी योजना बनाई जा रही है। इस संबंध में वन रक्षकों/मालियों/श्रमिकों को ग्राफ्टिंग तकनीक का प्रशिक्षण दिया जा चुका

है तथा अग्रिम प्रशिक्षण की भी योजना बनाई जा रही है। इसके अलावा, आंवला, हरड़ और रीठा के लिए अनुमानित उपज/पेड़ (चौथा वर्ष) क्रमशः 25 किग्रा, 30 किग्रा और 10 किग्रा है, जो 10 वर्षों के बाद 1-2 क्विंटल/वृक्ष तक बढ़ जाएगा। आंवला, हरड़ और रीठा की मौजूदा बाजार कीमत क्रमशः 2000 रुपये/क्विंटल, 4000 रुपये/क्विंटल और 5000 रुपये/क्विंटल है।

मई 2023 में शतावरी के लगभग 20000 पौधों की कटाई होनी है। अनुमानित उपज 16 क्विंटल/हेक्टेयर (शुष्क भार) 80 ग्राम प्रति पौधा है। जड़ों का औसत बाजार मूल्य 26500 रुपये प्रति क्विंटल है। उपार्जित लाभों को समूह के 8 सदस्यों के बीच 50000 रुपये प्रति व्यक्ति (लगभग) की दर से वितरित किया जाएगा। साथ ही मण्डी वन मण्डल में जुलाई 2022 के दौरान तीन नये क्षेत्रों खारसी, धारवाहन एवं तरनोह में इस प्रजाति के 60000 पौधों का रोपण किया गया है।

जुलाई-अगस्त, 2021 के दौरान सुकेत वन मण्डल के रोपडी गांव में 2 हेक्टेयर निजी भूमि में 50,000 एलोवेरा के पौधों का रोपण किया गया है तथा जुलाई-अगस्त, 2023 तक फसल की पहली कटाई की उम्मीद है। इसके अलावा, प्म्ठज्-पालमपुर की सलाह पर, समूहों द्वारा अगस्त 2022 के दौरान सुकेत वन मण्डल में धवाल और रोपडी में निजी भूमि पर 27,461 एलोवेरा (।स1 किस्म) के पौधों का रोपण किया गया है। पहली कटाई 1.5 साल बाद की जाएगी। धवाल और रोपडी में क्रमशः 8 और 9 सदस्यों वाले 2 समूहों के लिए पहली फसल के बाद कुल आय 30000 रुपये प्रति व्यक्ति (लगभग) होने की उम्मीद है (7 रुपये के बायबैक तंत्र के साथ प्रति पौधा वजन 3 किलोग्राम होगा)/किलोग्राम)। इसके बाद, 3 फसल/वर्ष अपेक्षित है।

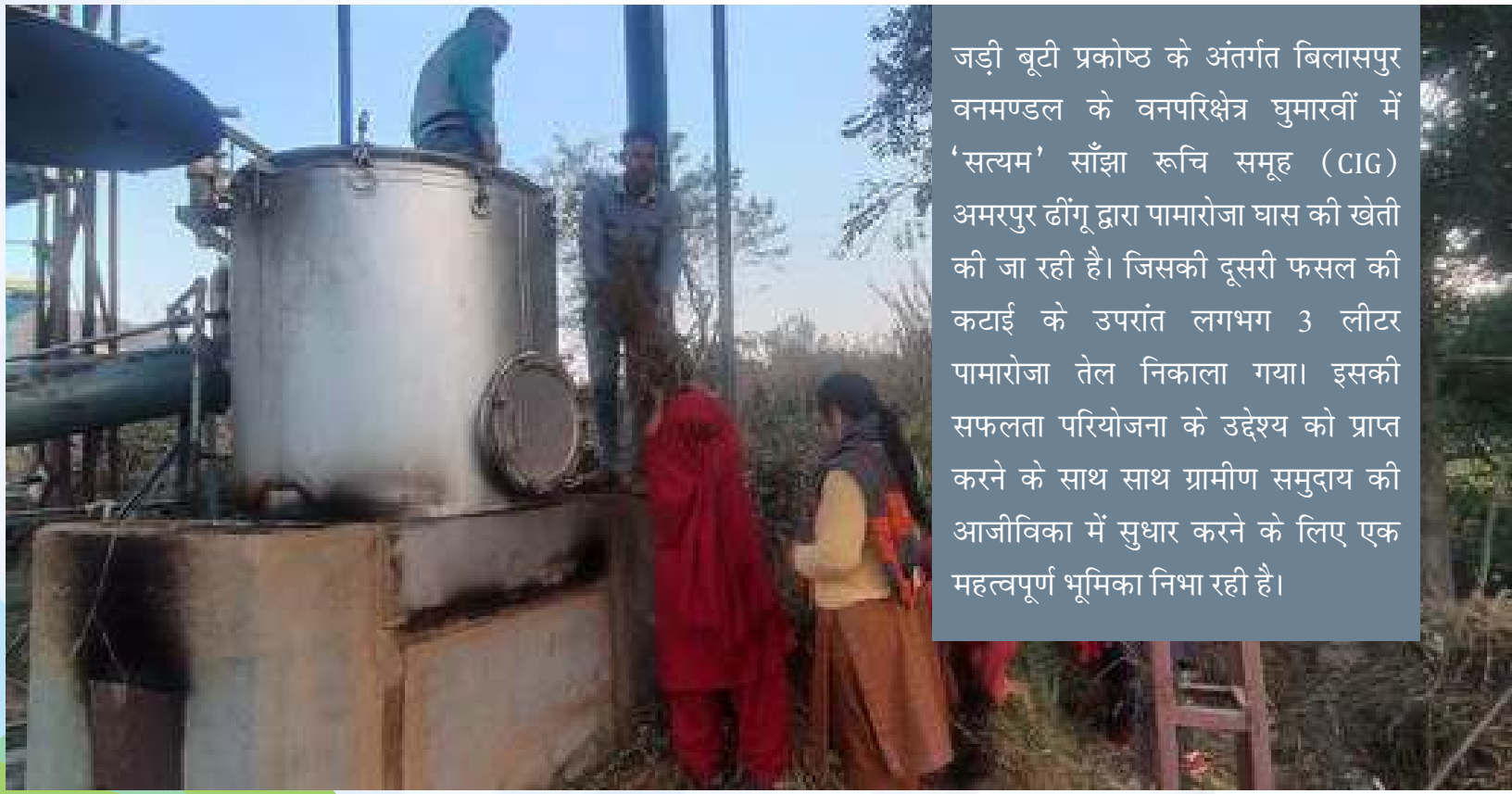

जड़ी बूटी प्रकोष्ठ के अंतर्गत बिलासपुर वनमण्डल के वनपरिक्षेत्र घुमारवीं में 'सत्यम' साँझा रूचि समूह (CIG) अमरपुर ढींगू द्वारा पामारोजा घास की खेती की जा रही है। जिसकी दूसरी फसल की कटाई के उपरांत लगभग 3 लीटर पामारोजा तेल निकाला गया। इसकी सफलता परियोजना के उद्देश्य को प्राप्त करने के साथ साथ ग्रामीण समुदाय की आजीविका में सुधार करने के लिए एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

जड़ी बूटी प्रकोष्ठ, पीएमयू शिमला के मार्केटिंग मैनेजर मोहित शर्मा ने मण्डी वन मंडल के ग्राम वन विकास समिति बिहनधार का दौरा किया व पतल बनाने वाली मशीन में समूह के सदस्यों को आ रही तकनीकी समस्याओं का समाधान किया। स्वयं सहायता समूह द्वारा 500 से 600 पतल तैयार किये तथा अधिकारियों ने स्वयं सहायता समूह के सदस्यों को बाकि शेष लक्ष्य को जल्द पूरा करने को भी सूचित किया।

ग्राम वन विकास समिति सनिहान के बाडू बड़ा देव स्वयं सहायता समूह के सदस्य अब टौर के डोने और पत्तल तैयार कर अपनी आर्थिकी को सुदृढ़ कर रहे हैं। समूह के सदस्यों को परियोजना के तहत पत्तल बनाने की मशीन उपलब्ध करवाई गई है। आजीविका वर्धन गतिविधियों को बढ़ावा देने हेतु टौर की पत्तियों से तैयार उत्पाद एक प्रभावीशाली माध्यम बन रहा है। जिसे लोगों द्वारा काफी पसंद किया जा रहा है। मशीन से बनाए जाने वाली पत्तल डिस्पोजेबल पत्तल की तरह होती है। टौर के पत्ते की निचली सतह में एक पेपर का प्रयोग किया जाता है। जिससे डोने और पत्तल बढ़िया किस्म की तैयार हो रही हैं। बाजार में टौर की पत्तियों से बने उत्पादों की काफी मांग है।

जाइका वानिकी परियोजना के माध्यम से घुमारवीं वन परिक्षेत्र के अमरपुर ढींगू में पामारोजा का प्रयोगात्मक विकास कार्य सफल रहा है। अब इसको पूर्ण रूप से सफल बनाने के लिए और इसका उत्पादन अधिक बढ़ाने के लिए सी.एस.आई.आर. – हिमालय जैव संपदा प्रौद्योगिकी संस्थान, पालमपुर के विशेषज्ञों के साथ मिलकर परियोजना कार्य कर रही है। इस क्षेत्र में पामारोजा उगाने का कार्य अब रिक्त बचे स्थानों पर शुरू किया जा रहा है। इस सम्बन्ध में मुख्य जड़ी बूटी प्रकोष्ठ के निदेशक डॉ. रमेश चंद कंग ने क्षेत्र का दौरा किया।

वन मण्डल मण्डी के वन परिक्षेत्र कटौला की ग्राम वन विकास समिति धार में परियोजना के माध्यम से 'मोरिंगा ओलिफेरा' की खेती की शुरुआत वन मंडल अधिकारी श्री वासु डोगरा के द्वारा पौधरोपण करके की गई।

सुकेत वन मण्डल के कांगू वन परिक्षेत्र की ग्राम वन विकास समिति वह में ग्राफ्टेड पौधे लगाने का शुभारंभ डॉ. रमेश चंद कंग, निदेशक (जडी बूटी प्रकोष्ठ) शिमला द्वारा किया गया। इस अवसर पर एच.पी.एफ.एस. (से. नि.) वी. पी. पठानिया , कार्यक्रम प्रबंधक डॉ. अखिलेश ठाकुर और कांगू वन परिक्षेत्र के विषय विशेषज्ञ सुकेत विजय कुमार, रेंज अधिकारी बहादुर सिंह, वन रक्षक रवि, क्षेत्रीय तकनीकी विशेषज्ञ सुनीता कुमारी व सारी ग्राम वन विकास समिति के सदस्य भी मौजूद रहे।

परियोजना प्रबंधन इकाई शिमला के जड़ी बूटी प्रकोष्ठ के निदेशक डॉ. रमेश चंद कंग सहित जाइका परियोजना के अधिकारियों व कर्मचारियों ने कमांद जाइका पौधशाला का दौरा किया व तैयार की जा रही पौध का निरीक्षण किया। इसके बाद उन्होंने कटौला वन परिक्षेत्र के धार में तैयार की गई मोरिंगा पौध का भी निरीक्षण किया।

हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन और आजीविका सुधार परियोजना (JICA द्वारा वित्तपोषित) के अंतर्गत वन मण्डल मण्डी के बिंहदर पत्तल निर्माण स्वयं सहायता समूह की बैठक का आयोजन किया गया। जिसमे समूह के सदस्यों को उचित रिकार्ड और पारदर्शिता रखने का आग्रह किया गया। मार्केटिंग टीम ने कहा कि समूह के सदस्यों को उनके उत्पाद के लिए मार्केटिंग में सहायता का आश्वासन दिया गया। इस अवसर पर मार्केटिंग मैनेजर विनोद शर्मा व मोहित शर्मा के साथ एस.एम.एस जितेन शर्मा विशेष तौर पर मौजूद रहे।

JICA वानिकी परियोजना व आर.सी. एफ.सी., एन.एम.पी. बी. जोगिंद्रनगर के सयुंक्त तत्वधान में रोहडू वनमण्डल के मांदल वन विश्राम गृह में एक लाख 30 हजार गुणवत्ता औषधीय पौध का वितरण स्थानीय किसानों व स्वयं सहायता समूहों में किया गया जिसमें जाइका द्वारा गठित स्वयं सहायता समूहों को 17 हजार पौधे वितरित किये गए। यहां पर वितरित किये गये पौधों को हेमवंती नंदन बहुगणा के रीसर्च सेण्टर में आर. सी. एफ.सी.एन.आर. आई. के द्वारा तैयार करवाया गया गया था। इसके अतिरिक्त आर. सी. एफ.सी.एन. आर. टी. द्वारा रोहडू में स्थानीय सोसाइटी त्रिदेव औषधीय उत्पादन सोसाइटी में भी नर्सरी लगाई गई थी और यह पौधे भी स्थानीय किसानों व स्वयं सहायता समूहों को उपलब्ध कराये गए। इसके साथ ही इन पौधों के कृषि संबंधी प्रशिक्षण भी दिया गया।

वनमण्डल सुकेत के वनपरिक्षेत्र कांगू की वन ग्राम विकास समिति धवाल के स्वयं सहायता समूह 'शिव गौरी' के सदस्य एलोवेरा की खेती करते हुए।

जाइका वानिकी परियोजना के अंतर्गत वन्य जीव मण्डल कुल्लू के वन्य जीव परिक्षेत्र मनाली के तहत कायस वन्य प्राणी अभ्यारण्य के धाराघोट क्षेत्र में ओम सिंघमल स्वयं सहायता समूह के साथ एक बैठक आयोजित की गई। इसमें समूह के सदस्यों को डॉ के.एस. कनवाल (वैज्ञानिक,जी. बी. पंत संस्थान, कुल्लू) द्वारा क्षेत्र की कृषि जलवायु दशा के अनुसार विभिन्न प्रकार की जड़ी - बूटियों से संबंधित जानकारी प्रदान की गई जिसमें कि कुटकी (*Picrorhiza kurrooa*), चिरायता (*Swertia chirayita*), पतीश (*Aconitum heterophyllum*), सतुवा (*Paris polyphylla*) इत्यादि प्रमुख रहे। इस अवसर पर जड़ी बूटी प्रकोष्ठ के डॉ. अखिलेश ठाकुर (प्रबंधक उद्यम विकास), मोहित शर्मा (प्रबंधक विपणन) व वन विभाग के अन्य कर्मचारी भी मौजूद रहे।

आजीविका सुधार

वनमण्डल बिलासपुर के वनपरिक्षेत्र झंडूता की ग्राम वन विकास समिति घांधीर के स्वयं सहायता समूह संतोषी और जय दुर्गे महिला के लिए बुनाई और बैग बनाने पर कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम में महिलाओं द्वारा तैयार उत्पाद।

वनमण्डल ठियोग के वनपरिक्षेत्र बलसन की ग्राम वन विकास समिति धागली बैच-1 के स्वयं सहायता समूह के साथ आय सृजन गतिविधि के रूप में वर्मीकम्पोस्टिंग के गड्ढे बनाना शुरू करने के संबंध में एक बैठक आयोजित की गई।

वनमण्डल किनौर के वनपरिक्षेत्र निचार की ग्राम वन विकास समिति त्रंडा और वनपरिक्षेत्र भाभा नगर की ग्राम वन विकास समिति चौरा के स्वयं सहायता समूहों को मशीन बुनाई पर कौशल आधारित प्रशिक्षण का उद्घाटन समारोह ट्रांडा और चौरा गांवों में आयोजित किया गया । स्वयं सहायता समूहों के सदस्य बहुत उत्साहित थे और उन्होंने इस प्रशिक्षण को प्रदान करने के लिए परियोजना की सराहना की।

वनमण्डल शिमला के वनपरिक्षेत्र मशोबरा की **ग्राम वन विकास समिति मूलकोटि** के स्वयं सहायता समूह आदर्श और प्रगति के सदस्यों के साथ आय सृजन गतिविधि को लेकर डॉ. लाल सिंह (आजीविका सलाहकार) ने बातचीत की। उन्होंने आय सृजन गतिविधि के रूप में शिटाके मशरूम का प्रदर्शन किया , जिसको लेकर महिलाओं में काफी उत्साह दिखा। इस अवसर पर श्री अंकुर (आजीविका सहायक) और श्री विनोद (कार्यक्रम प्रबंधक) योशा सोलंकी (एसएमएस), पूजा (एफटीयू समन्वयक मशोबरा रेंज) और प्रतिभा शर्मा (एफटीयू समन्वयक तारादेवी रेंज) भी उपस्थित थीं।

वनमण्डल सुकेत के वनपरिक्षेत्र सरकाघाट की ग्राम वन विकास समिति धालयाट्ट गैहरा के स्वयं सहायता समूह गुग्गा राणा के लिए बुनाई पर कौशल आधारित प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लेती महिलाएं। चित्र में महिलाओं द्वारा निर्मित एक बेहतरीन रचना का नमूना प्रस्तुत है।

वनमण्डल पार्वती के वनपरिक्षेत्र हुरला के वन ग्राम वन विकास समिति कपिल मुनि बसोना के स्वयं सहायता समूह ज्योति की महिलाओं द्वारा निर्मित आचार को मोहल कुल्लू के नेचर पार्क में बेचा गया।

> वनमण्डल पार्वती में स्वयं सहायता समूह 'वीर नाथ हुर्ला' के सदस्यों को सिलाई मशीनों का वितरण परियोजना के माध्यम से किया गया और आगामी योजना के लिए समूह के सदस्यों के साथ बैठक आयोजित की गई।

जाइका द्वारा वित्त पोषित वानिकी परियोजना के अंतर्गत ग्राम वन विकास समिति ज्यूरी, रामपुर (सराहन परिक्षेत्र) में स्वयं सहायता समूहों द्वारा तैयार किए गए उत्पादों की एक झलक।

ठियोग वन मण्डल के बलसन वन परिक्षेत्र में जय मां चामुंडा स्वयं सहायता समूह ने स्वेटर बुनाई को अपनी आय सृजन गतिविधि के रूप में शामिल किया।

परियोजना के अंतर्गत वनमण्डल शिमला के वनपरिक्षेत्र तारादेवी में ग्राम वन विकास समिति पनेश के मशरूम और वर्मीकम्पोस्ट स्वयं सहायता समूहों के सदस्यों के साथ परियोजना सलाहकार (आजीविका) डॉ. लाल ने संवाद किया और उन्हें आजीविका बढ़ाने के माध्यम बताए।

वनमण्डल बिलासपुर के वनपरिक्षेत्र झंडूता में ग्राम वन विकास समिति घांदीर के स्वयं सहायता समूहों संतोषी और जय माँ दुर्गा की महिलाओं ने कटिंग और सिलाई के कौशल विकास प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षुओं द्वारा तैयार उत्पाद।

बिलासपुर वनमण्डल के झंडूता वनपरिक्षेत्र के ग्राम वन विकास समिति प्रकृति के तहत गठित स्वयं सहायता समूह के सदस्यों द्वारा तैयार बेहतरीन उत्पाद।

वनमण्डल शिमला के वनपरिक्षेत्र कण्डा के स्वयं सहायता समूह एकता में डॉ. लाल सिंह (आजीविका सलाहकार) और रीना शर्मा (एसएमएस) ने मशरूम उत्पादन इकाई का दौरा किया तथा तैयार समूह द्वारा तैयार की जा रही मशरूम उत्पादन का निरीक्षण किया।

संस्थागत सुदृढ़िकरण

रामपुर वन वृत के तहत रामपुर, किन्नौर व आनी वन मंडल से सेवानिवृत एचपीएफएस अधिकारियों, विषय वस्तु विशेषज्ञों और क्षेत्रीय तकनीकी इकाई समन्वयकों के लिए वृत्त स्तर पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन विश्राम गृह नोगली में किया गया। कार्यशाला की अध्यक्षता परियोजना सलाहकार श्री गिरीश भारद्वाज द्वारा की गई।

वनमण्डल बिलासपुर के वनपरिक्षेत्र झंडुता की ग्राम वन विका समिति घांधीर के तहत स्वयं सहायता समूह संतोषी व जय दुर्गे का बुनाई और बैग बनाने पर 20 दिवसीय कौशल विकास प्रशिक्षण शिविर का हुआ आगाज।

वनमण्डल किन्नौर के वनपरिक्षेत्र भावानगर की ग्राम वन विकास समिति बारा खम्बा गांव में हथकरघा खादी (बैच-1) के स्वयं सहायता समूह के लिए कौशल आधारित प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है। यह प्रशिक्षण स्थानीय प्रशिक्षक के माध्यम से दिया जा रहा है। इसके उपरांत एक बैठक आयोजित की गई जिसमें परिक्रामी निधि सहित प्रशिक्षण कार्यक्रम के संबंध में विस्तृत चर्चा हुई और कटिंग एंड टेलरिंग ग्रुप के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम जनवरी के प्रथम सप्ताह में आयोजित करने का निर्णय भी लिया गया।

वनमण्डल बिलासपुर के वनपरिक्षेत्र झंडूता की ग्राम वन विकास समिति घांधीर के स्वयं सहायता समूह संतोषी और जय दुर्गे का बुनाई और बैग बनाने का 20 दिवसीय कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम सम्पन हुआ।

वनमण्डल जोगिंद्रनगर के वनपरिक्षेत्र कमलाह (धर्मपुर) की ग्राम वन विकास समिति सरी के स्वयं सहायता समूह जय सकरैणी मां व ग्राम वन विकास समिति फिहड़ के स्वयं सहायता समूह गायत्री मां के लिए बुनाई पर कौशल आधारित प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू किया गया।

वनमण्डल रोहडू के वनपरिक्षेत्र सरस्वतीनगर की ग्राम वन विकास समिति रुहिल मालोग और छाजपुर घाटी के स्वयं सहायता समूहों के लिए सिलाई कटाई पर कौशल आधारित प्रशिक्षण कार्यक्रम की शुरूआत की गई। यह प्रशिक्षण स्थानीय प्रशिक्षक के माध्यम से दिया जा रहा है।

वनमण्डल जोगिंद्रनगर के वनपरिक्षेत्र लडभड़ोल की ग्राम वन विकास समिति रेन्स भलारा के सदस्यों के लिए अचार बनाने का कौशल आधारित प्रशिक्षण दिनांक 09.01.2023 को शुरू किया गया। प्रशिक्षण विशेषज्ञों को समृद्धि महिला सोसायटी ठाकुर द्वारा से नियुक्त किया गया है। इस अवसर पर श्री बी. एस. यादव (हिमाचल वन सेवा, सेवानिवृत) सहित वन विभाग व परियोजना के कर्मचारी मौजूद रहे।

वनमण्डल जोगिन्द्रनगर के वनपरिक्षेत्र उरला की ग्राम वन विकास समिति डिगली के स्वयं सहायता समूह सरोजनी एव ग्राम वन विकास समिति जनवां के स्वयं सहायता समूह मां दुर्गा के बैग बनाने का प्रशिक्षण शिविर का समापन समारोह आयोजित किया गया। इस प्रशिक्षण के समापन के दौरान प्रतिभागियों से संवाद किया गया और भविष्य में उत्पादन रिकॉर्ड रखने और विपणन के बारे में कैसे काम करेंगे इत्यादि विषयों पर चर्चा की गई। श्री बी.एस. यादव (हिमाचल वन सेवा,सेवानिवृत्त) द्वारा प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र दिए गए।

वनमण्डल मण्डी के वनपरिक्षेत्र कोटली में बैच- II के तहत मॉडयूल आधारित 2 दिवसीय कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर श्री वी. पी. पठानिया (हिमाचल वन सेवा, सेवानिवृत), श्री अविनाश चंदेल चार्टर्ड अकाउंटेंट, एस. एम.एस. जितेन शर्मा इत्यादि मौजूद रहे।

वन मण्डल किनौर के वनपरिक्षेत्र कटगांव की ग्राम वन विकास समिति रॉकचार्ज-कचरंग के स्वयं सहायता समूह जय काली मां का बैच-3 के तहत कौशल आधारित प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रगति पर है। इसमें महिलाएं उत्साह से खडी से विभिन्न उत्पादों की बुनाई सीख रही है और अपनी आजीविका का सशक्त माध्यम तैयार कर रही है।

वनमण्डल आनी के वनपरिक्षेत्र आनी की ग्राम वन विकास समिति सहरसा के स्वयं सहायता समूह सहरसा के लिए 'सिलाई कटाई' पर कौशल आधारित प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू किया गया। इस प्रशिक्षण के लिए महिलाओं में काफी खासा उत्साह देखा जा रहा है।

वनमण्डल ठियोग के वन वनपरिक्षेत्र कोटखाई की ग्राम वन विकास समिति कड़ेल के स्वयं सहायता समूह विजय के लिए बुनाई और ग्राम वन विकास समिति चोल कुफेरबाग के स्वयं सहायता समूह जय चाल माता के लिए कटिंग और टेलरिंग का कौशल आधारित प्रशिक्षण पूरे जोरों पर चल रहा है। समूहों की महिलाओं में काफी उत्साह देखा जा रहा है।

ठियोग वन मण्डल की वृत्त स्तरीय जाइका पौधशाला सैंज के परिसर में बैच -I के जय मां दुर्गे एवं जय मां चामुंडा स्वयं सहायता समूहों के लिए दो सप्ताह की मशीन बुनाई प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन समारोह आयोजित किया गया। जिसमें वन मण्डलाधिकारी ठियोग श्री अशोक नेगी द्वारा 30 सदस्यों को प्रशिक्षण प्रमाण पत्र प्रदान किए गए। प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षुओं द्वारा तैयार किए गए उत्पादों को भी प्रदर्शित किया गया। समारोह के दौरान स्वर साधना कला मंच, शिमला द्वारा नुक्कड़ नाटक के माध्यम से लोगों को परियोजना के बारे में बताया गया। इस मौके पर हिलटॉप सॉल्यूशंस प्राइवेट लिमिटेड से श्री बलबीर (निदेशक), श्री सुनील और वन मण्डल के अधिकारी व कर्मचारी भी उपस्थित रहे।

ठियोग वन मण्डल के बैच-II एवं बैच-III के क्षेत्रीय तकनीकी इकाई समन्वयक को परियोजना के विभिन्न कार्यकलापों सम्बन्धी प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें ठियोग वन मण्डलाधिकारी श्री अशोक नेगी ने प्रशिक्षुओं को जाइका वानिकी परियोजना की गतिविधियों तथा इस वन मण्डल में की जा रही गतिविधिों के लक्ष्यों को प्राप्त करने में समन्वयक की भूमिका के बारे में बताया। इस प्रशिक्षण में डॉ ओमपाल शर्मा, खंड अधिकारी श्री ब्रह्मानंद शर्मा, वन विभाग व परियोजना के कर्मचारियों ने भी भाग लिया।

जाइका वानिकी परियोजना के अंतर्गत नव नियुक्त कर्मचारियों (विषय विषेशज्ञ एवं फील्ड समन्वयकों) के लिए **एक दिवसीय कार्यशाला कृषि सहकारी समिति और प्रशिक्षण संस्थान, सांगटी, शिमला** में की गई। इस अवसर पर अतिरिक्त प्रधान मुख्य अरण्यपाल एवं मुख्य परियोजना निदेशक (जाइका) श्री नागेश कुमार गुलेरिया, भा.व.से. ने कार्यशाला में उपस्थित कर्मचारियों को विस्तार पूर्वक परियोजना के उद्देश्यों, लक्ष्यों एवं कार्यप्रणाली के बारे में अवगत करवाया।

जाइका वानिकी परियोजना के सौजन्य से **ठियोग वन मण्डल की वृत्त स्तरीय जाइका पौधशाला सैंज** में जैविक कृषि-उत्पाद अनुसंधान एवं विकास के लिए हिमालयी संगठन (**HIMOARD**) खनेरी, रामपुर बुशहर, शिमला, हिमाचल प्रदेश द्वारा वर्मीकम्पोस्टिंग पर पांच स्वयं सहायता समूहों के लिए एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें ग्राम वन विकास समिति काशना के स्वयं सहायता समूह भवानी, लोअर मुंडू, राधा कृष्ण मंदिर जोइ और ज्ञान ज्योति को गुणवत्तापूर्ण वर्मीकम्पोस्ट कैसे तैयार किया जाता है इस बारे में प्रत्यक्ष प्रस्तुतिकरण किया गया।

प्रशिक्षण के दौरान **HIMOARD** के अध्यक्ष डॉ. आर. एस. मिन्हास ने प्रशिक्षुओं को निःशुल्क प्रशिक्षण सहायता / ट्राइकोडर्मा आदि प्रदान किए गए। स्वयं सहायता समूह के अध्यक्ष सुश्री उमा, सुश्री सुभद्रा और सुश्री अनीता ने मुख्य परियोजना निदेशक (जाइका) श्री नागेश कुमार गुलेरिया और ठियोग वन मण्डलाधिकारी श्री अशोक नेगी को अंतर्राष्ट्रीय ख्याति के विशेषज्ञ द्वारा इस तरह के मूल्यवान प्रशिक्षण का आयोजन करने और उनके लिए वर्मीकम्पोस्ट बनाने के वास्तविक प्रदर्शन की व्यवस्था करने के लिए धन्यवाद प्रेषित किया।

दिनांक 18-06-2022 को जाइका वानिकी परियोजना की **एक दिवसीय कार्यशाला कृषि सहकारी कर्मचारी प्रशिक्षण संस्थान सांगटी समरहिल** में संपन्न हुई। कार्यशाला की अध्यक्षता अतिरिक्त प्रधान मुख्य अरण्यपाल व परियोजना मुख्य निदेशक श्री नागेश कुमार गुलेरिया ने की। कार्यशाला का आयोजन प्रदेश के 7 जिलों में परियोजना में कार्यरत रिटायर्ड हिमाचल वन सेवा अधिकारियों व एस.एम.एस. के लिए किया गया। इस कार्यशाला में इन सभी प्रतिनिधियों ने अपने-अपने कार्यक्षेत्र में हो रही गतिविधियों की प्रस्तुति की व परियोजना में नवनियुक्त एस.एम.एस. ने परियोजना में होने वाले कार्यों की बारिकी से जानकारी प्राप्त की व जमीनी स्तर पर इस परियोजना को कैसे उतारा जाये, आम जन मानस को कैसे जोड़ा जाये व उनकी आजीविका में वृद्धि हो इत्यादि विषयों पर चर्चा की गई। हिमाचल में जाइका वानिकी परियोजना के अंतर्गत चलाई जा रही विकासात्मक गतिविधियों की समीक्षा व उनको तीव्र गति से आगे बढ़ाने हेतु भी कार्यशाला में चिन्तन किया गया। इस अवसर पर मुख्य परियोजना निदेशक ने कार्यशाला में मौजूद प्रतिनिधियों को संबोधित करते हुए कहा कि समस्त स्टाफ को परियोजना का मुख्य उद्देश्य समझना चाहिए व हमारी प्राथमिकता परियोजना को नयी उंचाईयों तक पहुंचना होना चाहिए। उन्होंने उपस्थित प्रतिभागियों से आह्वान किया कि स्वयं सहायता समूहों, विशेषकर महिलाओं की आजीविका में वृद्धि हेतु आय सृजन गतिविधियों पर विशेष ध्यान दिया जाए। इस अवसर पर परियोजना के जड़ी बूटी प्रकोष्ठ के निदेशक डॉ. आर.सी. कंग सहित अन्य गणमान्य व्यक्ति भी मौजूद रहे।

दिनांक 22-06-2022 को जाइका वानिकी परियोजना के अंतर्गत **रामपुर वन मंडल के सराहन वन** परिक्षेत्र में निर्मित स्वयं सहायता समूह जय ब्रहमेश्वर व महिला ग्राम विकास समूह के लिए 15 दिनों का सिलाई व कटाई कौशल विकास प्रशिक्षण का विधिवत समापन समारोह अतिरिक्त वन संरक्षक श्री नितिन खोजान व वन परिक्षेत्र अधिकारी श्री सतीश कुमार जी की अध्यक्षता में पूर्ण हुआ ।

वनमण्डल नूरपूर में एक दिवसीय कार्यशाला/प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया! इस शिविर में महिलाओं को परियोजना के माध्यम से आजीविका वृद्धि हेतु विभिन्न गतिविधियों के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई! इस अवसर पर वन मंत्री राकेश पठानिया ने कहा कि परियोजना हमारी माताओं – बहनों को आत्मनिर्भर बनाने के साथ-साथ, आर्थिक रूप से सुदृढ़ भी बनाएगी। इस अवसर पर मुख्य परियोजना निदेशक श्री नागेश कुमार गुलेरिया ने भी संबोधित किया और परियोजना के बारे में उपस्थित जनसमूह को जानकारी दी! इस अवसर पर परियोजना निदेशक श्री राजेश शर्मा भी मौजूद रहे।

वनमण्डल कुल्लू की ग्राम वन विकास समिति पीज के स्वयं सहायता समूहों 'जगजननी' व वैष्णों का हथकरघा प्रशिक्षण 27 अप्रैल 2022 से 30 जुलाई 2022 तक चला। जिसमें महिलाओं ने बढचढ़कर भाग लिया और परियोजना के माध्यम से मिले सहयोग के लिए आभार प्रकट किया।

JICA वानिकी परियोजना के अंतर्गत वनमण्डल सुकेत की वन ग्राम विकास समिति सरकाघाट की वन ग्राम विकास समिति कलस खरौट के स्वयं सहायता समूह मुराह देवी में बुनाई का प्रशिक्षण व वन ग्राम विकास समिति कठोगण के स्वयं सहायता समूह नैणा देवी में सिलाई-कढ़ाई का प्रशिक्षण कार्य प्रगति पर है। इस क्षेत्र की महिलायें गहन रूचि के साथ कार्य सीख रही है, जो की इनकी आजीविका वृद्धि में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेगी।

JICA वानिकी परियोजना के सौजन्य से बिलासपुर वन मण्डल के झंडूता वन परिक्षेत्र के स्वयं सहायता समूहों शिवम, शक्ति और कृष्णा के सदस्यों के लिए आचार, हल्दी, मसाले, सीरा, सिवैयां व बड़ियाँ बनाने का प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया।

हिमाचल दुग्ध प्रसंघ, मिल्क प्लांट दत्तनगर में वनमण्डल आनी के वनपरिक्षेत्र निथर के स्वयं सहायता समूह नौणी की महिलाओं के लिए एक दिवसीय पनीर बनाने के लिए प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया गया।

वनमण्डल चौपाल के वनपरिक्षेत्र कंडा में ग्राम वन विकास समिति शिलाल के स्वयं सहायता समूह शिरगुल महाराज शिलाल और ग्राम वन विकास समिति धार-चूड़ियां के स्वयं सहायता समूह धार और चुरियां को कटिंग और टेलरिंग पर कौशल विकास प्रशिक्षण दिया जा रहा है। इस प्रशिक्षण में महिलाएं ने काफी रुचिपूर्ण भाग लिया।

जाइका वानिकी परियोजना के सौजन्य से बिलासपुर वन मण्डल के घुमारवीं वन परिक्षेत्र के स्वयं सहायता समूह नैना के लिए 7 दिवसीय कौशल विकास प्रशिक्षण (स्कूल बैगों को बनाने को लेकर) कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में महिलाओं ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया और बैग बनाने की विधि को बारीकी से सीखा।

दिनांक 21-11-2022 जाइका वानिकी परियोजना के अंतर्गत वनमण्डल ठियोग के कर्मचारियों और वार्ड फैसिलिटेटरों के लिए **एक दिवसीय प्रशिक्षण/कार्यशाला** का आयोजन आज वनवृत स्तरीय नर्सरी सैंज में किया गया। अतिरिक्त प्रधान मुख्य वन अरण्यपाल एवं मुख्य परियोजना निदेशक श्री नागेश कुमार गुलेरिया ने कार्यशाला की अध्यक्षता की। इस अवसर पर बोलते हुए उन्होंने कहा कि रूपये 800 करोड़ की परियोजना राज्य के 7 जिलों में 460 वीएफडीएस/बीएमसी उप समितियों के माध्यम से प्रगति पर है। उन्होंने कहा कि परियोजना के तहत 72 विभागीय नर्सरियों का उन्नयन किया गया है जिससे विभिन्न प्रजातियों के गुणवत्तापूर्ण पौधों का उत्पादन करने में मदद मिली है और विभागीय और सहभागी वन प्रबंधन मोड के तहत 4600 हेक्टेयर क्षेत्र में रोपण किया गया है। उन्होंने कहा कि कॉमन इंट्रेस्ट ग्रुप और स्वयं सहायता समूहों को जैव विविधता सुधार कार्यक्रम के तहत औषधीय प्रजातियों के पौधे लगाने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। उन्होंने कहा कि राज्य में 600 से अधिक स्वयं सहायता समूहों/सीआईजी का गठन किया गया है, जिनमें से 500 से अधिक समूह शुद्ध महिला समूह हैं। उन्होंने वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन और आजीविका में सुधार के लिए जाइका परियोजना द्वारा प्रदान की गई आधुनिक तकनीकों का उपयोग करते हुए परियोजना में होने वाले कार्यों की गति को बनाए रखने के लिए कर्मचारियों और वार्ड सहायकों से आह्वान किया। इस अवसर पर परियोजना निदेशक श्री राजेश शर्मा, डॉ ओमपाल शर्मा (हिमाचल वन सेवा, सेवानिवृत), एस.एम.एस. रीना शर्मा, अभय महाजन इत्यादि उपस्थित रहे।

वनमण्डल व वन परिक्षेत्र मण्डी की ग्राम वन विकास समिति बैच 1 लखदाता पीर के महादेव और राधे कृष्णा स्वयं सहायता समूह को एक दिवसीय केंचुआ जैविक खाद का प्रशिक्षण वार्ड, ट्रोह पंचायत तहसील बल्ह में दिया गया। परियोजना के सौजन्य से यह एक दिवसीय प्रशिक्षण कृषि विज्ञानं केंद्र सुंदरनगर से डॉ. नेहा चौहान और डॉ.शिवानी ठाकुर द्वारा दिया गया। समूह की प्रशिक्षु महिला सदस्यों को केंचुआ जैविक खाद को तैयार करने और उसके उपयोगों के बारे बताया गया।

पौधशालाओं का सुधार व पौध उत्पादन

वन परिक्षेत्र ठियोग में जाइका वानिकी परियोजना के माध्यम से तैयार की जा रही है जिसमें टैक्सस बकाटा प्रजाति की कलमों को उगाने का काम जोरो पर चला हुआ है, लगभग चार हजार कटिंग पहले ही पूरी हो चुकी हैं और पी बैग में बीस हजार कटिंग को पूरा करने का व्यापक अभियान जारी है, नर्सरी साइट में अनेक लोगों को प्रशिक्षण दिया।

मण्डी जिला के जोगिन्दरनगर वन मंडल की रोपड़ी ग्राम वन विकास समिति में पौधारोपण करते हुए परियोजना के कर्मचारी व वन ग्राम विकास समिति के सदस्य।

वनमण्डल किन्नौर के वन परिक्षेत्र भाभा नगर में नर्सरी का निरीक्षण परियोजना के अधिकारियों व कर्मचारियों ने किया। अखरोट के पौधों की क्यारियों में कीटों के हमले देखे गए। नर्सरी में उपलब्ध नर्सरी स्टॉक हैं: चिलगोजा - 89000 नग, देवदार - 7320, बेहमी-700, अखरोट-500, चुल्ली-700, खानोर-300, खिरक-780, अंगूठा-900 नग, सीएम शर्मा ,(हिमाचल वन सेवा, सेवानिवृत्त) ने शोल्टू में वनपरिक्षेत्र भाभा नगर के कर्मचारियों के साथ बैठक की और पौधरोपण जल्द से जल्द हो इसके लिए रणनीति बनाई।

वर्ष 2021-22 के दौरान जिन क्षेत्रों में पीएफएम मोड के तहत ग्राम वन विकास समिट त्रडा द्वारा अग्रिम कार्य किया गया था, वहां 14 जुलाई, 2022 से शुरू होने वाली मानसून रोपण के लिए निचार पौधशाला से देवदार के पौधे भेजे गए।

वनमण्डल चौपाल के वनपरिक्षेत्र कण्डा में परियोजना के माध्यम से तैयार की गई पौधशाला।

वन परिक्षेत्र सराहन में ग्राम वन विकास समिति किन्नु के पौधारोपण क्षेत्र को आग से बचाने हेतु सूखे घास व झाड़ियों की कटाई का कार्य किया गया। इससे ग्रामीण महिलाओं को रोजगार उपलब्ध हो रहा है व पौधरोपण क्षेत्र को आग से बचाने हेतु तैयार किया गया। साथ ही फायर लाइन को भी साफ किया गया। इस कार्य को वार्ड फैसिलिटेटर की निगरानी में किया गया।

वनमण्डल सुकेत के वनपरिक्षेत्र सरकाघाट की ग्राम वन विकास समिति 'कठोगण' पी एफ एम मोड में पौधारोपण के कार्य का शुभारंभ किया गया।

प्रमुख गतिविधियाँ

अतिरिक्त प्रधान मुख्य अरण्यपाल एवं मुख्य परियोजना निदेशक (जाइका वानिकी परियोजना) श्री नागेश कुमार गुलेरिया 2 दिवसीय ऐतिहासिक चौथी विश्व परियोजना प्रबंधन फोरम (डब्ल्यूपीएमएफ) बैठक में भाग ले रहे हैं, जो 14-15 दिसंबर 2022 को नई दिल्ली में आयोजित की जा रही है। यह 'नई चुनौतियां नई परियोजनाएं नए अवसर' पर विचारों के निरंतर आदान-प्रदान की नींव रखता है। विश्व परियोजना प्रबंधन फोरम के चार्टर द्वारा प्रमुख चिंताओं को दूर करने के लिए विचारों का निरंतर आदान-प्रदान किया जा रहा है। वे दृष्टि प्राप्ति के सामने के अंत में तैनात परिणाम-संचालित प्रथाओं के माध्यम से कई समाधानों पर चर्चा कर रहे हैं और कैसे तकनीकी प्रगति और जलवायु परिवर्तन पर प्रभाव जैसे स्थिरता के विचारों का पूर्ण संज्ञान लेकर परियोजनाएं बनाई जा सकती हैं।

डॉ. अतुल कुमार गुप्ता, पूर्व प्रधान मुख्य अरण्यपाल (वन बल प्रमुख) त्रिपुरा व Dr- Jochen Stat, कृषि एवं ग्रामीण विकास विभाग प्रमुख ने जाइका वानिकी परियोजना मुख्यालय पॉटरहिल का दौरा किया तथा अतिरिक्त प्रधान मुख्य अरण्यपाल एवं मुख्य परियोजना निदेशक (जाइका) श्री नागेश कुमार गुलेरिया, भा.व.से. से मुलाकात की। बैठक में मुख्य रूप से परियोजना के संस्थागत क्षमता निर्माण तथा वन एवं जल सरंक्षण के क्षेत्र में परियोजना द्वारा किये जा रहे कार्यों पर चर्चा की गई। डॉ. अतुल कुमार गुप्ता ने परियोजना द्वारा प्रदेश में वन प्रबंधन एवं संस्थागत क्षमता निर्माण के क्षेत्र में किये गए प्रयासों को सराहा।

पालमपुर के 'सरस मेले' में जाइका वानिकी परियोजना के अंतर्गत विभिन्न स्वयं सहायता समूह द्वारा तैयार किए गए उत्पादो की प्रदर्शनी व बिक्री स्टाल लगाए गए। जिसमें अतिरिक्त प्रधान मुख्य अरण्यपाल एवं मुख्य परियोजना निदेशक श्री नागेश कुमार गुलेरिया ने शिरकत की तथा स्वयं सहायता समूह के सदस्यों के साथ बातचीत की।

जाइका वानिकी परियोजना का कांगड़ा जिला के लिए विधिवत उद्घाटन करते मुख्यमंत्री जयराम ठाकुर, वन मंत्री राकेश पठानिया, उद्योग मंत्री विक्रम ठाकुर, राज्यसभा सांसद इंदु गोस्वामी व परियोजना के अतिरिक्त प्रधान मुख्य अरण्यपाल एवं मुख्य परियोजना निदेशक श्री नागेश कुमार गुलेरिया

Additional Principal Chief Conservator of Forests&cum&Chief Project Director] Shri Nagesh Kumar Guleria with Mr- Saito Mitsunori] Chief Representative] JICA India Office and Mr Akamine kengo (Senior Representative] JICA India) at captioned seminar organized by JICA on 23 & 24 June] 2022 at Rudraksh International Cooperation and Conversation Centre (RICCC)] Varanasi] Uttar Pradesh.

दिनांक 22 अप्रैल, 2022 को वन विभाग हिमाचल प्रदेश की बैठक विभाग मुख्यालय टॉलेंड शिमला में हुई, जिसकी अध्यक्षता प्रधान सचिव (वन) डॉ. रजनीश ने की। इस बैठक में वन विभाग में चल रही गतिविधियों से संबंधित जानकारी ली गई। बैठक में प्रधान सचिव (वन) डॉ. रजनीश ने वानिकी के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही जाइका वानिकी परियोजना में चल रही गतिविधियों की भी जानकारी ली। इस अवसर पर जाइका वानिकी परियोजना के अतिरिक्त प्रधान मुख्य अरण्यपाल एवं मुख्य परियोजना निदेशक (जाइका) श्री नागेश कुमार गुलेरिया ने परियोजना के बारे में प्रस्तुतीकरण किया। उन्होंने बताया कि जाइका परियोजना हिमाचल प्रदेश के 7 जिलों शिमला, कुल्लू, मंडी, किन्नौर, लाहौल एवं स्पीति, बिलासपुर व कांगड़ा जिलों में कार्यान्वित की जा रही है। वर्ष 2018-19 से 2027-28 तक चलने वाली इस वानिकी परियोजना पर 800 करोड़ रूपये खर्च किये जायेंगे। उन्होंने बताया कि हिमाचल प्रदेश के वनों को हरा-भरा करने के प्रयासों को गति प्रदान करने के लिए जाइका परियोजना द्वारा वन पौधशालाओं की आधुनिकीकरण प्रक्रिया आरंभ की गई है। जिससे पौधशालाओं में लगभग 65 लाख पौधे तैयार करने की अतिरिक्त क्षमता विकसित हो चुकी है। इस अवसर पर प्रधान मुख्य अरण्यपाल एवं वन बल प्रमुख, श्री अजय श्रीवास्तव व वन विभाग के अन्य आला अधिकारी मौजूद रहे।

APCCF&cum & CPD (JICA Forestry Project) Sh- Nagesh Kumar Guleria] Dr- Sushil Kapta APCCF and Parveen Taak Joint Secretary Forest Department of Himachal Pradesh visited JFMC Terogvunya of Wokha District of Nagaland Forestry Project (JICA Funded) and the Plantation area.

APCCF cum CPD JICA Forestry Project Sh- Nagesh Kumar Guleria] Dr- Sushil Kapta APCCF and Sh- Parveen Taak joint Secretary Forest Department of Himachal Pradesh visited to JFMC areas of the Nagaland JICA Forestry Project near Mukokchung.

Principal Secretary of Forest Department Sh- Onkar Sharma and Additional Pr- CCF&cum&Chief Project Director (JICA) Sh- Nagesh Kumar Guleria signing of agreement with SOFRECO company Chief EÛecutive Officer over working Dinner on 12&10&2022.

दिनांक 28-04-2022 को हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन एवं आजीविका सुधार परियोजना (जाइका वित्तपोषित) की 7 वीं गवर्निंग बॉडी की बैठक राज्य सचिवालय शिमला में हुई, जिसकी अध्यक्षता प्रधान सचिव (वन) डॉ रजनीश ने की। उन्होंने कहा की आज के समय में हमें वनों में लग रही आग को रोकने के लिए अपना भरपूर प्रयास करना चाहिए और ग्राम वन विकास समितियों के माध्यम से लोगों को जंगल बचाने के लिए जागरूक करना चाहिए। अतिरिक्त मुख्य अरण्यपाल एवं मुख्य परियोजना निदेशक (जाइका) श्री नागेश कुमार गुलेरिया ने जाइका वानिकी परियोजना के अंतर्गत होने वाले कार्यों की विस्तृत जानकारी बैठक में रखी, उन्होंने जानकारी देते हुए कहा की जाइका वानिकी परियोजना के तहत विभिन्न विकासात्मक गतिविधियों पर वर्ष 2021-2022 के दौरान 45.90 करोड़ खर्च किये गए हैं

और आगामी वित्तीय वर्ष में 97 करोड़ खर्च किये जाने की योजना है। बैठक के दौरान प्रधान सचिव (वन) डॉ. रजनीश ने जाइका वानिकी परियोजना के अंतर्गत पिछले वित्त वर्ष में किये गए कार्यों की सराहना की। इस बैठक में वन विभाग के अधिकारी भी आभासी माध्यम से जुड़े रहे। इस अवसर पर प्रधान मुख्य अरण्यपाल एवं वन बल प्रमुख श्री अजय श्रीवास्तव, श्री राजीव कुमार, प्रधान मुख्य अरण्यपाल वन्यप्राणी व अन्य विभागों के आलाधिकारी उपस्थित रहे।

दिनांक 01-09-2022 को जाइका वानिकी परियोजना की **एक दिवसीय कार्यशाला कृषि सहकारी कर्मचारी प्रशिक्षण संस्थान सांगटी समरहिल** में संपन्न हुई। कार्यशाला की अध्यक्षता प्रधान मुख्य अरण्यपाल (वन बल प्रमुख) श्री अजय श्रीवास्तव ने की। उन्होंने जाइका वानिकी परियोजना की तारीफ करते हुए कहा कि परियोजना के कार्य काबिले तारिफ है जोकि क्षमता से अधिक कार्य कर रही है। ग्रामीण लोगों को साथ लेकर वन संरक्षण और उनकी आजीविका में वृद्धि भी कर रही है।

कार्यशाला का आयोजन प्रदेश के 7 जिलों में कार्यरत एस.एम.एस. व एफ.टी.यू. कोऑर्डिनेटर के लिए किया गया इस कार्यशाला में इन सभी प्रतिनिधियों ने अपने अपने कार्यक्षेत्र में हो रही गतिविधियों की प्रस्तुति की व परियोजना में नवनियुक्त एसएमएस ने परियोजना में होने वाले कार्यों की बारिकी से जानकारी प्राप्त की व जमीनी स्तर पर इस परियोजना को कैसे उतारा जाये व आम जनमानस को परियोजना से जोड़ा जाये व उनकी आजीविका में वृद्धि हो इत्यादि विषयों पर चर्चा की गई। हिमाचल में जाइका वानिकी परियोजना के अंतर्गत चलाई जा रही विकासात्मक गतिविधियों की समीक्षा व उनको तीव्र गति से आगे बढ़ाने हेतु भी कार्यशाला में चिन्तन किया गया।

इस अवसर पर अतिरिक्त प्रधान मुख्य अरण्यपाल एवम मुख्य परियोजना निदेशक नागेश कुमार गुलेरिया ने कार्यशाला में मौजूद प्रतिनिधियों को संबोधित करते हुए कहा कि समस्त स्टाफ को परियोजना का मुख्य उद्देश्य समझना चाहिए व हमारी प्राथमिकता परियोजना को नयी उंचाईयों तक पहुचना होना चाहिए। उन्होंने उपस्थित प्रतिभागियों से आह्वान किया कि स्वयं सहायता समूहों, विशेषकर महिलाओं की आजीविका में वृद्धि हेतु आय सृजन गतिविधियों पर विशेष ध्यान दिया जाए। उन्होंने जडी बूटी सैल के बारे में भी बताते हुए कहा कि परियोजना के माध्यम से जड़ी बूटी का भी संरक्षण किया जा रहा है और जड़ी बूटियों को बढ़ाने के लिए भी लोगों को जागरूक किया जा रहा है। इस अवसर पर अतिरिक्त प्रधान मुख्य अरण्यपाल डा. सुशील कपटा, परियोजना निदेशक श्री राजेश शर्मा, जड़ी बूटी सैल के निदेशक डा. आर.सी. कंग, परियोजना सलाहकार डा. लाल सिंह सहित अन्य गणमाण्य व्यक्ति मौजूद रहे।

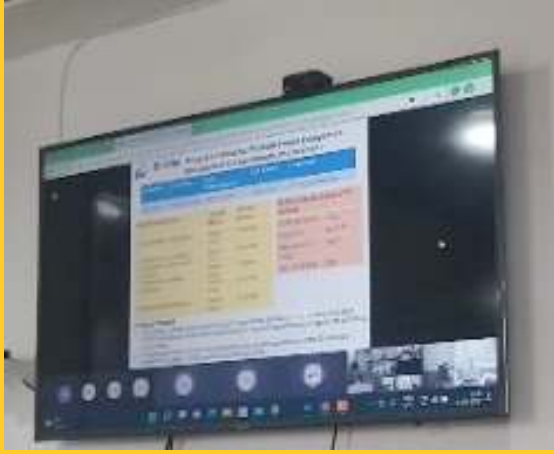

भारत सरकार के वित मंत्रालय व आर्थिक मामलों के विभाग द्वारा आज देशभर में चल रही जाइका वितपोषित परियोजनाओं की **भौतिक और वित्तीय प्रगति की समीक्षा बैठक आभासी (वीडिओ कॉन्फ्रेंसिंग)** माध्यम से श्री रजत कुमार मिश्रा, अतिरिक्त सचिव भारत सरकार की अध्यक्षता में आयोजित की गई। जिसमें देशभर में परियोजना से जुड़े विभागों के प्रमुख अधिकारियों ने अपने-अपने क्षेत्र व राज्य में चल रही परियोजना से संबधित कार्यो की जानकारी रखी। हिमाचल प्रदेश जाइका वानिकी परियोजना का पक्ष अतिरिक्त प्रधान मुख्य अरण्यपाल व मुख्य परियोजना निदेशक, श्री नागेश कुमार गुलेरिया, IFS ने रखा। उन्होंने वित मंत्रालय के अधिकारियों को बताया की 400 से अधिक सूक्ष्म योजनाऐं और व्यावसायिक योजनाऐं स्वयं सहायता समूहों की आजीविका बढ़ाने के लिए तैयार की जा चुकी हैं और वित् वर्ष 2022-2023 तक 500 से अधिक नए स्वयं सहायता समूह के साथ काम करेंगे। उन्होंने बताया की परियोजना के माध्यम से महिलाएं अपनी आजीविका को विभिन्न गतिविधियों जैसे मशरुम उत्पादन, हथकरघा, चीड़ की पतियों से बने सजावटी उत्पाद, सीरा सेपू बड़ी, टौर की पतले बनाकर बढ़ा रही है और परियोजना के माध्यम से इन्हे हर प्रकार की सहायता दी जा रही है। वित मंत्रालय व जाइका इंडिया के अधिकारियों ने कहा कि देशभर में चलाई जा रही परियोजनाओं में हिमाचल प्रदेश जाइका वानिकी परियोजना बेहतरीन कार्य कर रही है। भारत सरकार के अतिरिक्त सचिव रजत कुमार मिश्रा ने परियोजना से प्रभावित होते हुए चाहा की वे स्वयं हिमाचल आकर कुछ गतिविधियों को देखना चाहेंगे ,इस पर श्री नागेश कुमार गुलेरिया ने उन्हें हिमाचल आने का निमंत्रण दिया।

त्रिपुरा प्रदेश के जाइका वानिकी परियोजना का एक प्रतिनिधिमंडल हिमाचल प्रदेश के 7 दिनों के दौरे पर नीरज कुमार (आईएफएस) की अध्यक्षता में परियोजना प्रबंधन इकाई त्रिपुरा जाइका वानिकी परियोजना के नौ सदस्यों के प्रतिनिधिमंडल ने आज पॉटरहिल समरहिल में हिमाचल प्रदेश जाइका वानिकी परियोजना मुख्यालय का दौरा किया। प्रतिनिधिमंडल हिमाचल प्रदेश की जाइका गतिविधियों को जानने के लिए एक सप्ताह के दौरे (18 सितंबर से 24 सितंबर 2022) पर है।

श्री राजेश शर्मा, परियोजना निदेशक हिमाचल जाइका वानिकी परियोजना ने आगंतुकों को परियोजना के तहत हिमाचल राज्य में की जा रही गतिविधियों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने कहा कि 330 से अधिक वीएफडीएस (ग्राम वन विकास समितियां) और 568 स्वयं सहायता समूह परोयोजना के अंतर्गत कार्य कर रहे हैं। उन्होंने प्रतिनिधि मंडल को परियोजना की सफलता की कहानियों के साथ वन्यजीव प्रबंधन, अग्नि सुरक्षा, ड्रोन प्रौद्योगिकी के उपयोग, अनुसंधान गतिविधियों, जडी बूटी सेल, वृक्षारोपण, नर्सरी में सुधार और आय सृजन गतिविधियों की स्थिति के बारे में जानकारी साझा की। त्रिपुरा के प्रतिनिधि मंडल ने त्रिपुरा में सतत जलग्रहण वन प्रबंधन परियोजना (SCATFORM) के तहत की जा रही गतिविधियों की जानकारी साझा की। बाद में, प्रतिनिधिमंडल ने शिमला वन प्रभाग के पनेश का दौरा किया और VFDS, SHG और समुदाय के सदस्यों के सदस्यों के साथ बातचीत की। श्री नीरज कुमार ने वीएफडीएस और एसएचजी के प्रयासों की सराहना की, विशेष रूप से महिलाओं की भूमिका, जिन्होंने आय सृजन गतिविधियों जैसे चीड़ से बने उत्पाद जिनमें कमाई की बड़ी संभावना है इत्यादि के बारे में बताया। प्रतिनिधि मंडल ने राज्य में परियोजना को सफलतापूर्वक बनाने के लिए राज्य सरकार, हिमाचल प्रदेश की परियोजना प्रबंधन इकाई, समुदायों और लाभार्थी के समन्वित प्रयासों की बी सराहना की। इस दौरे के दौरान प्रतिनिधिमंडल हिमाचल में परियोजना की प्रगति से खुद को परिचित कराने के लिए सुकेत, मंडी, कुल्लू और वन्य जीव विभाग की फील्ड गतिविधियों का भी दौरा करेगा।

दिनांक 10-11 -2022 को हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन एवं आजीविका सुधार परियोजना (जाइका वित्तपोषित) की 8वीं गवर्निंग बॉडी की बैठक राज्य सचिवालय शिमला में हुई । जिसकी अध्यक्षता प्रधान सचिव (वन) श्री ओंकार शर्मा ने की। बैठक के प्रारम्भ में अतिरिक्त मुख्य अरण्यपाल एवं मुख्य परियोजना निदेशक (जाइका) श्री नागेश कुमार गुलेरिया ने जाइका वानिकी परियोजना के अंतर्गत होने वाले कार्यों की विस्तृत जानकारी दी और पूर्व में हुई गवर्निंग बॉडी की बैठकों की संक्षिप्त जानकारी भी बैठक में रखी। उन्होंने जानकारी देते हुए कहा की जाइका वानिकी परियोजना के तहत विभिन्न विकासात्मक व आजीविका वर्धन कार्य परियोजना के अंतर्गत आने वाले क्षेत्रें में हो रहे हैं। उन्होंने बताया की 400 से अधिाक माइक्रोप्लान, बिजनेस प्लान स्वयं सहायता समूहों की आजीविका बढ़ाने के लिए तैयार किए जा चुके हैं और वित् वर्ष 2022 -2023 में 500 से अधिक नए स्वयं सहायता समूह के साथ काम करने के लक्ष्य की ओर अग्रसर हैं। परियोजना की विभिन्न सफलताओं की कहानियों के बारे में भी उन्होंने बताया। एक उदाहरण घुमारवीं का है जिसमें 10 महिलाओं के स्वयं सहायता समूह 'जागृति' ने मधुमखी पालन से लगभग 40 हजार का शहद बेचा और प्रति महिला को 4 हजार का मुनाफा हुआ। अब जिसकी मांग स्थानीय बाजार, जिला व प्रदेश स्तर के बाजारों में भी बढ़ने लगी है। परियोजना में 22 से अधिक आजीविका वर्धन गतिविधियां चलाई जा रही हैं जिसमें सिलाई - कढ़ाई, मशरुम उत्पादन, टौर के पतों से डूने व पत्तलें मुख्य गतिविधियां हैं और इनकी मार्केटिंग के लिए विभिन्न माध्यम उपलब्ध कराए जा रहे हैं। बैठक के दौरान प्रधान सचिव (वन) ओंकार शर्मा ने जाइका वानिकी परियोजना के अंतर्गत होने वाले कार्यों की सराहना की और कहा की हमें परियोजना के माध्यम से ऐसे उदाहरण स्थापित करने चाहिए जिससे लोगों का विश्वास और उत्साह परियोजना के प्रति बढ़ें। उन्होंने पहले से कार्य कर रहे स्वयं सहायता समूहों को और अधिक सशक्त बनाने का आह्वान किया। बैठक में विभिन संस्थानों से आए प्रतिनिधियों ने अपने सुझाव व विचार रखे। बैठक के अंत में धन्यवाद प्रस्ताव डी.एफ.ओ. एवं परियोजना निदेशक (जाइका) श्री राजेश शर्मा ने प्रस्तुत किया। इस मौके पर प्रधान मुख्य अरण्यपाल एवं वन बल प्रमुख श्री अजय श्रीवास्तव, सयुंक्त सचिव (वन) श्री प्रवीण ताक, जड़ी बूटी प्रकोष्ठ के निदेशक डॉ. आर.सी. कंग, वन विभाग, कृषि विभाग, नौनी विश्वविद्यालय के अधिकारी व परियोजना के कर्मचारी भी मौजूद रहे।

दिनांक 17-11-2022 को राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय बालूगंज की राष्ट्रीय सेवा योजना की टीम ने 7 दिवसीय कैम्प के तीसरे दिन हिमाचल प्रदेश जाइका वानिकी परियोजना मुख्यालय पॉटरहिल, शिमला का दौरा किया। राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवकों ने हिमालय वन अनुसंधान संस्थान की पॉटरहिल स्थित नर्सरी को भी करीबी से देखा और विभिन्न वनस्पतियों के बारे में जानकारी हासिल की। इस अवसर पर स्वयंसेवी छात्रें ने पॉटरहिल के जंगल में फैले कूड़े-कचरे को साफ किया और स्वच्छता के बुलंद नारे व गीत भी गाए।

तदोपरांत, जाइका मुख्यालय में उन्होंने जाइका से संबंधित जानकारी भी अर्जित की, कि कैसे परियोजना के माध्यम से वन आश्रित समाज को साथ लेकर वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन को मजबूत किया जा रहा है और उनकी आजीविका में भी सुधार किया जा रहा है।

इस मौके पर अतिरिक्त प्रधान मुख्य अरण्यपाल एवं मुख्य परियोजना निदेशक, श्री नागेश कुमार गुलेरिया ने छात्रों को सम्बोधित करते हुए सबका स्वागत किया और राष्ट्रीय सेवा योजना बालूगंज की टीम की सराहना करते हुए कहा कि इस तरह की गतिविधियों से समाज और देश की प्रगति सम्भव है और उन्होंने छात्रों को विशेषकर नशे से दूर रहने का आह्वान किया। उन्होंने छात्रों को पढाई के साथ खेलकूद, अन्य सामाजिक गतिवधियों में भी बढ़चढ़कर भाग लेने को कहा कि इससे व्यक्ति का सम्पूर्ण विकास होता है। उन्होंने छात्रों से जंगलों व प्राकृतिक स्त्रेतों को भी बचाने का आह्वान किया। उन्होंने स्वयंसेवी छात्रों को साधुवाद प्रदान किया और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना भी प्रकट की। इस अवसर पर परियोजना निदेशक श्री राजेश शर्मा, वैज्ञानिक एवं परियोजना सलाहकार डॉ. लाल सिंह, बालूगंज विद्यालय के एन.एस.एस. नोडल अधिकारी श्री अनिल अवस्थी, श्रीमती अनुपम गुलेरिया, श्रीमती सुषमा शर्मा इत्यादि मौजूद थे।

सामुदायिक विकास कार्य

वनमण्डल किन्नौर के वनपरिक्षेत्र कटगांवकी ग्राम वन विकास समिति कांगो में सामुदायिक कार्य के चिल्ड्रन पार्क मैदान का कार्य प्रगति पर है। ग्रामीण बच्चों के लिए यह पार्क सकारात्मक वातावरण तैयार करने में मदद करेगा।

वनमण्डल किन्नौर के वनपरिक्षेत्र मालिंग की ग्राम वन विकास समिति हंगो द्वारा ''सामुदायिक विकास'' कार्यक्रम के तहत 'पक्का पैदल मार्ग' का निर्माण कार्य प्रगति पर है।

वनमण्डल सुकेत के वनपरिक्षेत्र सरकाघाट की ग्राम वन विकास समिति 'कठोगण' में सामुदायिक विकास भवन का कार्य प्रगति पर है ।

वनमंडल सुकेत के वन परिक्षेत्र सरकाघाट की ग्राम वन विकास समिति बलद्वाड़ा में सिंचाई के लिए स्टोरेज टैंक का निर्माण किया गया। इस वार्ड में सिंचाई के पानी की बहुत कमी थी जिस के कारण यहां के सभी लोग आज से पहले वर्षा जल के ऊपर ही निर्भर खेती करते थे।

JICA वानिकी परियोजना के अंतर्गत वन मण्डल सुकेत के वन परिक्षेत्र सरकाघाट की वन बीट देव ब्राड़ता की ग्राम पंचायत जंझैल में सिंचाई के लिए जल भंडारण टैंक का निर्माण किया गया, जिसकी क्षमता लगभग 15000 लीटर है। इस टैंक के निर्माण से लगभग एक हजार ग्रामीणों को लाभ होगा।

परियोजना में हो रहे कार्यों की सफलता की कहानियां

हिमाचल प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्र में महिलाओं की आजीविका के लिए मशरूम की खेती एक वरदान

नागेश कुमार गुलेरिया, भा.व.से.
अतिरिक्त प्रधान मुख्य अरण्यपाल
एवं मुख्य परियोजना निदेशक **(JICA)**

जापान अंतर्राष्ट्रीय सहयोग एजेंसी (JICA) द्वारा वित्त पोषित हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन एवं आजीविका सुधार परियोजना का प्रदेश के सात जिलों में कार्यान्वयन किया जा रहा है। परियोजना के सहयोग से ग्राम वन विकास समितियों के स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) की सामुदायिक आजीविका बढ़ाने के लिए 24 आय सृजन गतिविधियों की पहचान की गई है।

हिमाचल प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों में महिला स्वयं सहायता समूह अपनी आजीविका के लिए प्रौद्योगिकी संचालित आय सृजन गतिविधियों को अपना रही हैं। नवंबर 2022 में शिमला शहर के उपनगरों में घनाहाटी के निकट ग्राम कांडा में एकता महिला स्वयं सहायता समूह को उनके गांव में जाइका वानिकी परियोजना के कर्मचारियों और विशेषज्ञों द्वारा बटन मशरूम की खेती के लिए उन्मुख किया गया था। समूह ने किराए के कमरे में 10 किलोग्राम के 245 बीज वाले कम्पोस्ट बैग के साथ बटन मशरूम का उत्पादन शुरू किया। बटन मशरूम के उत्पादन में स्वयं सहायता समूह की महिला सदस्यों के लिए परियोजना के विशेषज्ञों द्वारा दिन-प्रतिदिन तकनीकी सहायता प्रदान की गई। 25 दिनों के बाद बटन मशरूम का उत्पादन शुरू हुआ और एक सप्ताह में समूह ने 200 किलोग्राम मशरूम का विपणन किया, जो एक सप्ताह में 20,000 रुपये से अधिक की सकल वापसी के साथ 110-130 रुपये प्रति किलोग्राम की कीमत पर मिल रहा है। इस उद्यम में समूह की यह पहली सफलता थी, जिसके लिए उन्हें औपचारिक रूप से प्रशिक्षित नहीं किया गया था और उनके प्रदर्शन स्थल पर परियोजना विशेषज्ञों के मार्गदर्शन में दिन-प्रतिदिन के संचालन के दौरान सीखा। उत्पादन लगभग 2 महीनों तक जारी रहेगा और इस दौरान समूह 500 किलोग्राम था उत्पादन करेगा जिसमें 50,000 रूपये बाजार मूल्य का कुल उत्पादन अपेक्षित है। महिला समूह की सदस्यों ने अपनी प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि यह बहुत सुगम गतिविधि है और चुनने, धोने, पानी भरने और पैकेजिंग के लिए केवल 1-2 घंटे की दैनिक देखभाल की आवश्यकता होती है। विपणन स्थानीय रूप से किया जाता है और मांग बहुत अधिक है और प्रदर्शन स्थल पर नकदी पर नए सिरे से बिक्री की जाती है। स्थानीय आबादी स्थानीय रूप से उगाए गए बटन मशरूम का आनंद ले रही है, जिसकी खेती गांव में शायद पहली बार किसी महिला समूह द्वारा की गई है। अतिरिक्त प्रधान मुख्य अरण्यपाल एवं मुख्य परियोजना निदेशक (JICA) हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन एवं आजीविका सुधार परियोजना श्री नागेश गुलेरिया ने कहा कि महिलाओं के इस समूह द्वारा मशरूम उगाने का परीक्षण सफल रहा है।

उन्होंने कहा कि समूह को एक लाख रूपये परिक्रामी निधि के रूप में प्रदान किए गए और इस आजीविका उद्यम को शुरू करने के लिए उन्हें गांव में ही तकनीकी प्रशिक्षण परियोजना के माध्यम से दिया गया। परियोजना का लक्ष्य राज्य के सात जिलों में 700 से अधिक स्वयं सहायता समूहों का गठन करना है और साथ ही उन्हें आजीविका के नवीन आय सृजन गतिविधियों को विकसित करने और अपनाने के लिए प्रोत्साहित करना है। ढींगरी और शिताके मशरूम की प्रजातियों की ज्यादा मांग और सूखे मशरूम के रूप में आसान विपणन को ध्यान में रखते हुए समूह में मशरूम उगाने में विविधता लाने के प्रयास जारी हैं। एकता स्वयं सहायता समूह की प्रधान सुश्री पूजा और समूह की अन्य महिलाओं का कहना है कि उन्हें बटन मशरूम उगाने का कोई व्यावहारिक प्रशिक्षण नहीं मिल रहा था, लेकिन जाइका परियोजना के विशेषज्ञों की प्रेरणा व सहायता ने हमारे लिए इसे संभव बनाया है। यह मशरूम उगाने का पहला प्रयास था और इस गतिविधि में रुचि रखने वाले विभिन्न घरों के कई आगंतुक और महिलाएं हैं।

मधुमक्खी पालन से महिलाओं की आर्थिकी में सुधार

रत्न लाल, एस.एम.एस. (सेवानिवृत आर.ओ.)

हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबन्धन एंव आजीविका सुधार परियोजना (JICA वितपोषित) जंहा वनों के घनत्व में सुधार किया जा रहा है वहीं आर्थिक रूप से पिछड़े ग्रामीण समुदायों, विशेषकर महिलाओं को आजीविका वर्धन की विभिन्न गतिविधियों से जोड़कर उन्हें आर्थिक रूप से मजबूत करने के लिए हर संभव प्रयास किऐ जा रहे हैं। बिलासपुर वनमण्डल के घुमारवीं वन परिक्षेत्र में पांच वन विकास समितियों का गठन किया गया है जिनमें अब तक ग्रामीण निर्धन महिलाओं के 8 स्वयं सहायता समूहों द्वारा आजीविका वर्धन गतिविधियां शुरू की गई हैं। परियोजना द्वारा इन समूहों को उचित मार्गदर्शन प्रशिक्षण और आजीविका वर्धन शुरू करने हेतू जरूरी सामान व परिक्रामी निधि उपलब्ध करवाई गई है । अब इन समूहों द्वारा विभिन्न प्रकार के परम्परागत उत्पाद तैयार किए जा रहे है व महिलाओं द्वारा अपने रोजमर्रा के कार्यों एंव घरेलू जिम्मेवारियों का यथावत निर्वहन करते हुए स्वयं सहायता समूह मे भी कार्य करके सम्मान जनक अतिरिक्त आय अर्जित की जा रही है । वन विकास समिति कोठी-टोबका में एक स्वयं सहायता समूह (जागृति)का गठन किया गया है तथा इस समूह ने (मधुमक्खी पालन) को अपनाने की इच्छा प्रकट की। समूह की 10 महिलाओं ने परियोजना कर्मचारियों के मार्गदर्शन स्वयं व्यापार योजना तैयार की व स्वीकृत करवाई। परियोजना द्वारा समूह की महिलाओं को घर-द्वार पर बढ़िया किस्म का प्रशिक्षण दिया गया और उन्हें मूल लागत का 50 प्रतिशत 86,500/- रुपये तथा 1,00,000/- रुपये परिक्रामी निधि उपलब्ध करवाई गई। समूह द्वारा मार्च माह में मधुमक्खी पालन का कार्य शुरू किया गया तथा 22ण्04ण्2022 तक एक महीने में ही लगभग 90 किण्ग्राण शहद निकाला जिसकी बाजार कीमत लगभग 40,000/- रुपये बनती है। शहद की मांग स्थानीय स्तर पर ही काफी है और इस आय को अर्जित करने में मधुमखियों की देखभाल करने के अलावा कोई भी व्यय नहीं हुआ है। प्रत्येक सदस्य की 4,000/- रुपये मासिक आय शुरूआत में ही बन गई है। अब महिलाएं बहुत खुश हैं और परियोजना का गुणगान व धन्यवाद करते नहीं थकती। इसी प्रकार अन्य स्वयं सहायता समूहों ने भी आय अर्जित करना शुरू की दी है । अन्य समूहों द्वारा सीरा, बड़ी बनाना, लहसुन, अदरक पेस्ट, आचार तथा चटनी आदि तैयार करने की गतिविधियां अपनाई हैं। अब महिलाएं अपने कार्य को बढ़ाने और दूसरी मिलती-जुलती गतिविधियों को शुरू करने पर विचार कर रही हैं।

इस प्रकार परियोजना सफलता की ओर अग्रसर है और निश्चित रूप से ग्रामीणों की आर्थिकी में बड़ा बदलाव लाए जाने की सम्भावना है।

डेयरी उत्पादन से जगदम्बा स्वयं सहायता समूह की महिलाएँ हो रही आत्मनिर्भर

किरण माला (क्षेत्रीय तकनीकी इकाई समन्वयक), वन परिक्षेत्र बलद्वाड़ा

परियोजना के तहत सुकेत वन मण्डल में बलद्वाडा वन परिक्षेत्र का चुनाव बैच-II में किया गया है। जिसमें वन परिक्षेत्र अंतर्गत 7 कमेंटियां गठित की गई। इन्हीं कमेटियों में से एक कमेटी गोभरता गांव में गठित की गई। कमेटी के अंतर्गत 2 स्वयं सहायता समूहों का गठन किया गया। इन्हीं में से एक है जगदम्बा स्वयं सहायता समूह, यह समूह 08ण्01ण्2017 को गठित हुआ था। जब परियोजना द्वारा इस गांव में ग्रामीण सहभागिता मूल्यांकन की बैठकें कि गई तो जगदम्बा समूह की महिलाओं ने आजीविका वर्धन गतिविधि के तहत अपनी रूचि दिखाई कि वे परियोजना द्वारा प्रशिक्षण लेना चाहती हैं ताकि वे आत्म-निर्भर बन सकें। इस समूह में 12 महिलाएं हैं जो 25 रुपये प्रति महीने की मासिक बचत करती हैं। समूह की प्रधान श्रीमति सत्या देवी व सचिव पूनम शर्मा हैं।

समूह की सभी महिलाओं ने आपसी सहमति से डेयरी उत्पादन में अपनी रूचि दिखाई जिस के तहत इन की व्यवसाय योजना बनाई गई व 06ण्09ण्2021 को परियोजना की तरफ से इनको प्रशिक्षण दिलवाया गया। जिसमें उन्हें पनीर, खोआ व अन्य दूध से बनी मिठाईयां बनाना सिखाई गई।

प्रशिक्षण के बाद इन महिलाओं द्वारा अर्जित की गई राशि का विवरण इस प्रकार है:

वर्ष	*राशि*
अक्तूबर 2021 से मार्च 2022	*71,940 रुपये*
अप्रैल 2022	*11,000 रुपये*
कुल अर्जित राशि	*82,940 रुपये*

समूह की महिलाएं पनीर, खोआ व घी बनाकर रिवालसर बजार व शादियों में आर्डर पर बेचती हैं।

समूह की महिलाओं ने बताया की परियोजना उनके लिए वरदान बन कर आई, इससे उनकी आर्थिक स्थिति में सुधाार हुआ है।

मशरूम उत्पादन बना आजीविका वर्धन का एक साधन

सरला देवी (क्षेत्रीय तकनीकी इकाई समन्वयक), वन परिक्षेत्र सरकाघाट

परियोजना के अंतर्गत चलाई जा रही गतिविधियों में आजीविका वर्धन के तहत ग्रामीण परिवारों की आय में वृद्धि हेतु सामूहिक रूप से कार्य करने को बढ़ावा देने के लिए टिक्कर पंचायत के वार्ड कठोगन में 17 किसानों का स्वयं सहायता समूह बनाया गया है ताकि किसान समूह में संगठित होकर कार्य करें जिससे सहभागिता को बढ़ावा मिले। जोगनी माता स्वयं सहायता समूह को 2 दिवसीय (01-03-2021 से 02-03-2021) प्रशिक्षण के0 वी0 के0 सुन्दरनगर में दिलवाया गया। समूह के लोगों को मशरूम उत्पादन का डेमो दिया गया, डेमो में 60 बैग मशरूम उत्पादन के लगाए जिससे मशरूम उत्पादकों काफी फायदा हुआ। डिंगरी मशरूम उत्पादन के समूह के सभी सदस्यों ने दो – तीन बार 1280 रुपये के मशरूम बेच कर समूह के खाते में जमा किए।

दूसरी फसल में 600 बैगों से 7 क्विन्टल मशरूम तैयार किया गया, जिसमें 4 क्विन्टल मशरूम बेचा गया जिससे 26630 रुपये का लाभ हुआ। तीसरी फसल के लिए 10-10-2021 को हमारे समूह से 3 सदस्य सोलन, चम्बा घाट गये वहां 11-10-2021 से 16-10-2021 तक मशरूम का प्रशिक्षण किया उसके पश्चात 16-11-2021 को पालमपुर से 170 बैग कम्पोस्ट के लाये। मशरूम बटन की फसल माह के मध्य तक चली, बटन मशरूम से 14,250 रुपये का लाभ हुआ। परियोजना द्वारा शुरूआती दौर में समूह के माध्यम से स्वयं सहायता समूह बनाकर लोगों को आजीविका वर्धन संबंधी गतिविधि को करवाना यह एक छोटी योजना थी परन्तु जिस प्रकार लोगों ने सहभागिता को अपनाया वह अपने विकास प्रक्रिया के प्रति जागरूक व प्रेरित हुए यह परियोजना की सफलता का परिचायक है। जिससे परियोजना अधिाकारियों व कर्मचारियों का विश्वास बढ़ा समूह के सदस्यों ने मशरूम उत्पादन की वजह से अपनी आमदानी बढ़ाई और अपनी आर्थिक स्थिति सुधारी उसके लिए समूह के सदस्य परियोजना का धन्यवाद करते नहीं थकते हैं।

टौर की पत्तल से आर्थिकी में सुधार

जितेन शर्मा, (एस.एम.एस. मण्डी)

हिमाचल प्रदेश पश्चिम हिमालय क्षेत्र स्थित एक पहाड़ी राज्य है। यह कहानी मण्ड़ी जिला के विकास खण्ड व वन परिक्षेत्र कटौला की वार्ड बिहनधार-1 ग्राम वन विकास समिति के स्वयं सहायता समूह जिसका नाम पत्तल मेकिंग समूह है। हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन एवं आजीविका सुधार परियोजना की ओर से 29-11-2020 को एक बैठक की गई, इस बैठक में पता चला कि यहां के लोग अपनी आजीविका की पूर्ति के लिए वन संसाधन पर निर्भर है। यहां के 10 परिवारों ने अपनी आजीविका को चलाने के लिए सामूहिक तौर पर टोर के पत्तों से पत्तल व ढोने बनाने का निर्णय किया क्योंकि यहां टौर के पत्ते की मांग व प्रचलन अधिक है तथा अन्य आजीविका के साधन बहुत कम हैं समूह के लोगों द्वारा आय सृजन गतिविधि व्यापार योजना पतल बनाने को आग्रह किया गया। इसके बाद छोटे से गांव में पत्ते बनाने का कार्य शुरू किया गया। इस समूह में 6 परिवार सामान्य और 4 परिवार अनुसुचित जाति से सम्बन्ध रखते है। यह सभी परिवार निम्न परिवार से सम्बन्ध रखते है। सुमित्र देवी जी का कहना है कि वर्तमान में जैसे-जैसे कार्यक्रम अधिक बढ़ रहे है इनकी मांग भी अधिक हो रही है। आजकल 20 से 25 हजार पत्तल एक दिन में बिक जाते है। हाथ से पत्तल बनाने में बहुत समय लगता है। समूह के सदस्यों का मानना है कि जैसे ही हमें हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन एवं आजीविका सुधार (जाइका) परियोजना की ओर से पत्तल बनाने की मशीन व प्रशिक्षण दिया गया उससे हमारा कार्य और भी आसान हो गया। अब हम एक घण्टे में 100 से ज्यादा पत्ता पलेट बना देते हैं। पहले हमें ठेकेदार आर्डर देता था अब हमारे पास आर्डर आते हैं । पहले ठेकेदार हमसे 1 रू में एक पत्ता लेकर स्वयं 2 रूण में बेचकर मुनाफा कमाते थे। अब स्वयं पलेट बनाने के बाद हमे इसके प्रति प्लेट 4 रू मिलते हैं । हमारे समूह को सीधा मुनाफा हो रहा है। पत्ता पलेट की मांग भी बहुत बढ़ रही है। पहले हाथ से बने पतल को लम्बे समय तक स्टोर नहीं कर सकते थे लेकिन अब पलेट बनाने के बाद इसे लम्बे समय तक स्टोर कर सकते है । हल्का होने के कारण परिवहन में आसानी होती है, पलेट के साथ-साथ अब डुने भी तैयार किये जाते है जिसकी मांग भी अधिक है। डुने बनाने में पहले ज्यादा पत्ते तथा ज्यादा समय लगता था परन्तु मशीन पर कम समय समय व कम पत्ते लगते। विभागीय प्रदर्शनियों में लगाये गए स्टाल में पत्ता प्लेट को दिखाया और बेचा गया तथा आर्डर भी लिए गए।

अभी तक आर्डर पर समूह ने 4000 पत्ता प्लेट बनाकर बेच दी है। समूह के प्रधान का कहना है कि यह हमारे लिए बहुत बड़ी उपलब्धि है इससे हमारे आर्थिक व सामाजिक जीवन में जागरूकता आई है व हमारा आत्म विश्वास भी बढ़ा है।

मीडिया में परियोजना गतिविधियां

10 NEWS — THE HINDU, SATURDAY, JULY 30, 2022

Boon for leaf plates, bowl makers in Himachal after ban of single-use plastic

Formation of self-help groups and machine installation with Japanese collaboration have improved the production of these eco-friendly products

Going green: Members of a self-help group involved in making leaf plates and bowls at Beindhar village.

PALAMPUR ▪ THURSDAY ▪ 12.5.2022

सैल्फ हैल्प ग्रुप के उत्पादों की बस स्टैंड व एच.पी.एम.सी. में भी होगी मार्कीटिंग

ब्रीफ न्यूज

शिमला में डॉ. शाहनवाज ने सिलाई मशीन व अन्य सामान किया वितरित

दिल्ली-उत्तर प्रदेश-हिमाचल-उत्तराखंड

ग्रामीण महिलाओं के लिए मशरूम की खेती एक वरदान

बिना किसी विशेष प्रशिक्षण के स्वयं सहायता समूह ने हासिल की कामयाबी

न्यूज एक्सप्रेस

आजीविका बढ़ाने को निरंतर प्रयासरत है जाइका वानिकी परियोजना

कंडा में एकता समूह से मिले अतिरिक्त मुख्य अरण्यपाल नागेश

आपका फैसला 23-4-2022

जायका वानिकी परियोजना में चल रही गतिविधियों की भी जानकारी ली

खुम्ब उत्पादन के क्षेत्र में महिलाओं ने रचा इतिहास, बटोरी वाहवाही

शिमला में मशरूम की खेती हुई शुरू जायका परियोजना कर रही सहयोग

25 दिनों के बाद बटन मशरूम का उत्पादन शुरू

जायका के अंतर्गत बनी विकास समिति के कार्यों का किया निरीक्षण

ग्रामीण वन विकास समिति के सामुदायिक भवन का उद्घाटन समारोह आयोजित

जायका के तहत रोहड़ू में 1.30 लाख पौधे वितरित

शिमला, 8 अगस्त (ब्यूरो): जायका वानिकी परियोजना के तहत जिला शिमला के रोहड़ू में 1.30 लाख औषधीय पौधों का वितरण स्थानीय किसानों व स्वयं सहायता समूहों में किया गया। वितरित किए गए पौधों को हेमवंती नंदन बहुगुणा के रीसर्च सैंटर में तैयार करवाया गया गया है। इन पौधों को जायका वानिकी परियोजना व आर.सी. एफ.सी., एन.एम.पी.बी. जोगिंदनगर के संयुक्त तत्वावधान में वितरित किए गए। किसानों को गुणवत्ता के औषधीय पौधे जैसे कुटकी, जटामानसी, सत्वा, कुठ एवं अतीस इत्यादि का वितरण किया गया। इस मौके पर उपस्थित लोगों को कृषि संबंधी प्रशिक्षण भी दिया गया। इसके अतिरिक्त रोहड़ू में स्थानीय सोसायटी त्रिदेव औषधीय उत्पादन सोसायटी में लगाई गई ... को स्थानीय किसानों व स्वयं सहायता समूहों को उपलब्ध कराया गया। इस अवसर ... वरिष्ठ अधिकारी, कर्मचारी व स्थानीय लोग मौजूद रहे।

... के वितरण के दौरान संयुक्त चित्र में अधिकारी व अन्य लोग। (छाया)

मीडिया में परियोजना गतिविधियां

हिमगिरी समाचार
हिमाचल जन जन की पुकार

शिमला, 15 सितम्बर। हिमाचल प्रदेश में जाइका परियोजना के तहत लोगों की आजीविका बढ़ाने के प्रयास किए जा रहे हैं। स्वयं सहायता समूह के जरिए लोगों की आजीविका बढ़ाने पर जोर दिया जा रहा है। इसके लिए बिजनैस प्लान तैयार किया गया है। महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए घरेलू उत्पादों को तैयार करने में मदद की जा रही है। प्रदेश के अतिरिक्त प्रधान मुख्य अरण्यपाल व मुख्य परियोजना निदेशक नागेश कुमार गुलेरिया ने वीरवार को ... मंत्रालय को यह जानकारी दी।

जायका के तहत 700 से अधिक स्वयं सहायता समूहों को किया जाएगा गठित

शिमला, 23 दिसम्बर (ब्यूरो): अतिरिक्त प्रधान मुख्य अरण्यपाल एवं मुख्य परियोजना निदेशक हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन एवं आजीविका सुधार परियोजना (जायका) नागेश गुलेरिया ने कहा कि ... प्रोत्साहित करना है। उन्होंने कहा कि नवम्बर 2022 में शिमला शहर के उपनगरों में घनाहट्टी के निकट गांव कांडा में एकता महिला स्वयं सहायता समूह को उनके गांव में जायका वानिकी परियोजना के ... विशेषज्ञों द्वारा ... के लिए प्रोत्साहित ... सदस्यों के लिए परियोजना के विशेषज्ञों द्वारा दिन-प्रतिदिन तकनीकी सहायता प्रदान की गई। 25 दिनों के बाद बटन मशरूम का उत्पादन शुरू हुआ और एक सप्ताह में समूह ने 200 किलोग्राम मशरूम का ... उत्पादन लगभग 2 महीनों तक जारी रहेगा और इस दौरान समूह 500 किलोग्राम उत्पादन करेगा, जिसमें 50,000 रुपए बाजार मूल्य का कुल उत्पादन अपेक्षित है। नागेश गुलेरिया ने कहा कि महिलाओं के इस समूह द्वारा मशरूम उगाने का परीक्षण सफ...

कुल्लू: हथकरघा प्रशिक्षण शिविर के समापन सम... चित्र में वन विभाग के अधिकारी व स्वयं सहायता...

वैष्णो स्वयं सहायता समूह का हथकरघा...

कुल्लू, 4 अगस्त (ब्यूरो): वैष्णो स्वयं सहा... वन विकास समिति पीज वन परिक्षेत्र कुल्लू ... प्रशिक्षण का वीरवार को समापन समारोह ... अरण्यपाल कुल्लू मनोज कुमार, रेंज ऑफिसर ...

पवन चुने प्रधान

सरकाघाट। वन परिक्षेत्र सरकाघाट के अंतर्गत गांव कठोगण में ग्रामीण वन विकास समिति की बैठक आयोजित की गई। आम सभा द्वारा दो साल के ... कार्यकारिणी ...

मांदली में उच्च औषधीय गुण वाले पौधों की खेती पर जागरूक किए किसान

गोहर। प्रदेश की जायका वानिकी परियोजना वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन में सुधार व किसानों की आजीविका वृद्धि में निरंतर प्रयासरत है। इसी कड़ी में भारत सरकार के आयुष मंत्रालय के राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड के क्षेत्रीय सेंटर आरसीएफसी नॉर्थ जोन एक व एनएमपीबी जोगिंदरनगर के तत्वाधान में गोहर उपमंडल व वन मंडल के मांदली विश्राम गृह में किसानों के लिए एक जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में डीएफओ गोहर शहनवाज अहमद भट्ट मुख्य अतिथि मौजूद रहे। इस अवसर पर श्रीनगर गढ़वाल ... वैज्ञानिक डॉ. पुरोहित ने बतौर विशिष्ट अतिथि शिरकत कर ... औषधीय पौधों की खेती के बारे में विस्तार से जानकारी दी। शिविर के दौरान त्रिदेव औषधीय पौध उत्पादन सोसाइटी से जुड़े किसानों व क्षेत्र के 50 से अधिक किसानों ने ... लिया। इस दौरान शिविर में उपस्थित किसानों को उच्च ... क्षेत्र में पाए जाने वाले औषधीय पौधों की खेती व इन ... विद्यमान उच्च औषधीय गुणों के बारे में विस्तार से ... दी गई। इस दौरान सभी किसानों को कुठकी, कुठ ... सल्वा, जटामासी व कशीर कोकोली औषधीय पौधे भी ... गए। ये पौधे हेमवंती नंदन बहुगुणा ... केंद्र एवं ... सोसाइटी की ओर से तैयार किया ...

महिलाओं को दिया हथकरघा का प्रशिक्षण

वन विकास समिति ने ... पौधे 3,000 पौधे

...द्वाड़ा (मंडी)। ...

10 NEWS

Boon for leaf plates, bowl makers in Himachal ...

Formation of self-help groups and machine installation with Japanese collaboration have improved ...

महिलाओं के जीवन में खुशहाली लाएगी जायका परियोजना: राकेश पठानिया

नूरपुर, 22 जुलाई (स.ह.): वन, युवा सेवाएं एवं ... राकेश पठानिया ने कहा है कि प्रदेश में चलाई ... महिलाओं के जीवन में खुशहाली ... निर्भर तथा आर्थिक तौर ... में विशेष भूमिका ...

महिलाओं के जीवन में खुशहाली लाएगी जाईका : राकेश

मिलेगी जानकारी : नूरपुर में जाईका परियोजना की प्रचार सामग्री को लांच क... राकेश पठानिया ● जागरण

संवाद सहयोगी, नूरपुर : वन मंत्री राकेश पठानिया ने कहा कि जाईका परियोजना महिलाओं के जीवन में खुशहाली लाने के साथ उन्हें ... निर्भर तथा आर्थिक तौर से सुदृढ़ ... में विशेष भूमिका निभाएगी। ... उन्होंने शुक्रवार को नूरपुर ... चलाया जा रहा है। इसके ... में 400 ग्राम वन विकास ... का गठन किया जाएगा। ... जिले में अब तक 268 ... विकास समितियों का गठन ... चुका है। इन समितियों के ... उपरांत प्रदेश के 100 स्वयं ... समूहों ने प्रशिक्षण प्राप्त कर ... कर दिया है। कांगड़ा जिले में ...

वन विकास समिति के प्रधानों-सचिवों को दिए टिप्स

जोगिंदरनगर। जाइका वानिकी परियोजना के अंतर्गत शुक्रवार को वन मंडल जोगिंदरनगर की उरला, लडभड़ोल व जोगिंदरनगर वन परिक्षेत्रों की 21 ग्राम वन विकास समितियों की बैठक वन विश्राम गृह चौंतड़ा में आयोजित की गई, जिसकी अध्यक्षता ... वन मंडल अधिकारी बीएस यादव ने की। बैठक में परियोजना के तहत होने ... समिति के प्रधान व सचिवों ...

महिलाओं के जीवन में खुशहाली लाएगी जाइका परियोजना: राकेश पठानि...

● कहा, आत्मनिर्भर और आर्थिक रूप से सुदृढ़ होंगी महिलाएं

जाइका परियोजना के तहत लगाया प्रशिक्षण शिविर

कार्यक्रम | बौड़ में कार्यक्रम में बोले मंत्री राकेश पठानिया, आत्मनिर्भर और आर्थिक रूप से सुदृढ़ होंगी महिलाएं

महिलाओं के जीवन में खुशहाली लाएगी जायका

मीडिया में परियोजना गतिविधियां

जनवाण वार्ड में पांच लाख से बनेगा सामुदायिक भवन

जायका प्रोजेक्ट के तहत होगा निर्माण, पहली किस्त के रूप में 2.50 लाख रुपए हो चुके हैं जारी

MON,01 AUGUST 2022
EDITION: HIMACHAL, PAGE NO. 4

सिंगल यूज प्लास्टिक पर बैन से पर्यावरण ही नहीं पत्तों की थाली-दोने बनाने वालों को भी होगा लाभ

स्वामी विवेकानंद के विचारों को युवाओं तक पहुंचाने में योग भारती की भूमिका सराहनीय : ललित जैन

ढींगरी और शिताके मशरूम की प्रजातियों की ज्यादा बढ़ रही मांग

महिलाओं की आजीविका के लिए मशरूम खेती बनी वरदान

वन मंडल रोहड़ू की विकास समितियों की बैठक

15 दिवसीय कटिंग एंड टेलरिंग ट्रेनिंग संपन्न

कृषकों और स्वयं सहायता समूहों को दी जायका परियोजना की जानकारी

शिमला/ऊषा शर्मा : जापान अन्तराष्ट्रीय सहयोग एजेंसी ... पोषित वानिकी परियोजना हिमाचल प्रदेश के ... शिमला, बिलासपुर, मन्डी, कांगड़ा और लाहौल ... 2018 से कार्यान्वित है। इसी कड़ी में बागी ... समिति हिमरी ब्लॉक, कोटखाई रेंज, ठियोग वन ... कृषक और जय भाल शक्ति स्वयं सहायता समूह ... गांव बागी में आयोजित की गई। इस दौरान स्वयं ... सदस्यों को समस्याओं के समाधान और परियोजना ... लेने के लिए प्रेरित किया गया। क्षेत्रीय तकनीकी ... नानिका सुमन ने कोटखाई रेंज ने ... संबंधित स्वयं सहायता ... किया।

कांगड़ा केसरी

सैल्फ हैल्प ग्रुप को मिलेंगे दुधारू पशु, दूध सरकार और खाद वन विभाग खरीदेगा

जंगल में बनाए तालाबों में भरा पानी

पंजाब केसरी
WED,20 APRIL 2022
EDITION: SHIMLA KESARI, PA

महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने बारे किया जागरूक

रिकांगपिओ, 19 अप्रैल (रिपन): जापान अंतर्राष्ट्रीय सहयोग एजैंसी द्वारा वित्त पोषित परियोजना हिमाचल प्रदेश के 7 जिलों किन्नौर, कुल्लू, शिमला, बिलासपुर, मंडी, कांगड़ा और लाहौल-स्पीति में मार्च 2018 से कार्यान्वित है। इसी कड़ी में जायका परियोजना के सौजन्य से वन मंडल किन्नौर के अंतर्गत निचार वन परिक्षेत्र में जायका फील्ड तकनीकी इकाई भावानगर रेंज की संयोजिका सुरेखा की अध्यक्षता में ग्राम वन विकास समिति बरी की जागृति स्वयं सहायता समूह द्वारा बैठक का आयोजन किया गया। इस बैठक में बरी गांव की महिलाओं ने भाग लिया। बैठक में आने वाले समय में अपने समूह की महिलाओं की आजीविका वृद्धि व आत्मनिर्भर बनाने के लिए चर्चा की गई। बैठक में संयोजिका सुरेखा ने महिलाओं को जानकारी देते हुए बताया कि महिलाएं किस तरह आत्मनिर्भर बनकर अपनी आजीविका में वृद्धि करके अपनी तथा परिवार की आर्थिक स्थिति मजबूत कर सकती हैं। इस अवसर पर जागृति समूह की कार्यकर्ताओं ने बैठक में जायका परियोजना के माध्यम से समय-समय पर अधिकारियों के सहयोग के लिए भी धन्यवाद किया।

नागेश गुलेरिया ने किया एकता स्वयं सहायता समूह कंडा का दौरा

महिलाओं को दिया जायका परियोजना की ओर से हरसंभव सहायता का आश्वासन

शिमला : उत्पादन स्थल का निरीक्षण करते अतिरिक्त मुख्य अरण्यपाल व मुख्य परियोजना निदेशक नागेश कुमार गुलेरिया।

शिमला, 27 दिसम्बर (ब्यूरो): अतिरिक्त मुख्य अरण्यपाल व मुख्य परियोजना निदेशक नागेश कुमार गुलेरिया ने मंगलवार को वन परिक्षेत्र तारादेवी की ग्राम वन विकास समिति कंडा के तहत एकता स्वयं सहायता समूह का दौरा किया तथा समूह के कार्यों का जायजा लिया।

जायका वानिकी परियोजना के तहत वन मंडल शिमला के वन परिक्षेत्र तारादेवी की ग्राम वन विकास समिति कंडा में स्वयं सहायता समूह एकता की 6 महिलाओं ने आय सृजन गतिविधि के रूप में धूप उत्पादन को चुना और इन महिलाओं ने 25 दिनों के भीतर 27000 रुपए से ज्यादा का धूप उत्पादन कर आत्मनिर्भरता व महिला सशक्तिकरण का एक बेहतरीन उदाहरण पेश किया है। इसी कड़ी में इस समूह की गतिविधि का जायजा लेने को मुख्य परियोजना निदेशक नागेश कुमार गुलेरिया ने उत्पादन स्थल का एकदिवसीय दौरा किया और समूह की महिलाओं से बातचीत की और उनको धूप उत्पादन में मिली सफलता पर उन्हें बधाई देकर प्रोत्साहित किया।

इस दौरान उन्होंने महिलाओं की समस्याओं को जाना तथा उन्हें आगे भी परियोजना की तरफ से हरसंभव मदद करने का आश्वासन दिया। समूह की महिलाओं ने भी मुख्य परियोजना निदेशक का धन्यवाद प्रकट किया।

इस अवसर पर परियोजना सलाहकार डा. लाल सिंह, प्रोग्राम मैनेजर विनोद शर्मा, एस.एम.एस. रीना शर्मा, ग्राम वन विकास समिति के प्रधान सहित सदस्य और स्थानीय ग्रामीण मौजूद रहे।

अधिक जानकारी के लिए कृपया निम्न पते पर सम्पर्क करें

मुख्य परियोजना निदेशक, जाइका वानिकी परियोजना

पॉटर्स हिल, समरहिल, शिमला–5, हिमाचल प्रदेश। दूरभाषः 0177–2830217, ई.मेलः cpdjica2018hpfd@gmail.com

***

परियोजना निदेशक, अनुश्रवण एवं मूल्यांकन इकाई

जाइका वानिकी परियोजना, कुल्लू। दूरभाषः– 01902–226636, ई.मेलः pdjicakullu@gmail.com

***

अतिरिक्त परियोजना निदेशक, सामुदायिक एवं संस्थागत क्षमता उत्थान इकाई

जाइका वानिकी परियोजना, रामपुर। दूरभाषः 01782–234689, ई.मेलःdpdrmp2018@gmail.com

***

Follow us on: /HPJICAPIHPFEML JICA HP Forestry Project www.jicahpforestryproject.com

Ptd. by: NEW ERA, Shimla Ph.; 0177-2628276